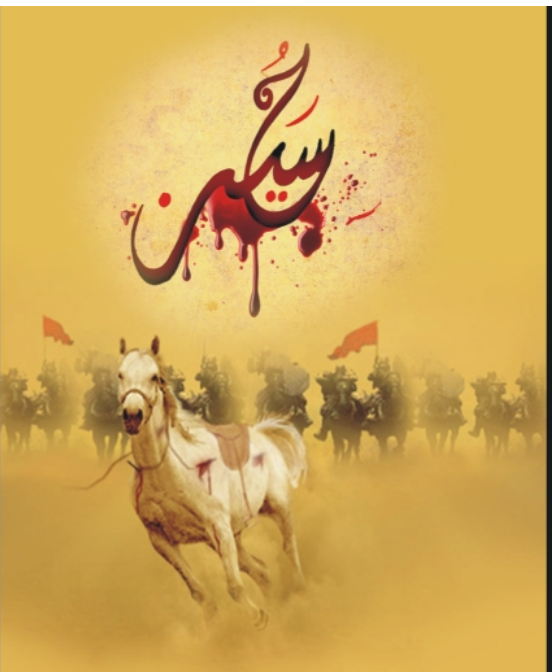

30.00 December 2012

# मरयम




अच्छा घराना अच्छी सोसाइटी

DNA का कांसेप्ट

ईरान में पैग़म्बरों का वजूद

कूफ़ियों का धोखा

खीरे वाला

शादी का पहला महीना

एक क़ौम की कहानी

बच्चों की पर्सनालिटी...

# मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

## ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

**एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...**

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

Subscription ID: A-00142
**Mr. AFTAB HAIDER RIZVI, LUCKNOW**

Subscription ID: B-00309
**Mr. S. PARWEZ HUSAIN, PATNA**

Subscription ID: A-00415
**Miss. SAKINA, NEW DELHI-25**

Subscription ID: B-00204
**Ms. HANIYA BATOOL, SAHARAN PUR**

Subscription ID: A-00783
**Mr. S.A.H. RIZVI, LUCKNOW**

उस ख़तरनाक माहौल में जब मज़बूत से मज़बूत इन्सान की भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे, उस मौक़े पर **जनाबे ज़ैनबअ०** का ही कमाल था कि उन्होंने समझ लिया था कि क्या करना है। तभी तो अपने भाई के शाना बा शाना चलते हुए उन्हें शहादत के लिए ख़ुद तैयार किया था। हुसैनअ० की शहादत के बाद भी जब हर तरफ़ जुलमत छाई हुई थी और दुनिया अंधेरे में डूबी हुई थी उस वक़्त भी यही अज़ीम ख़ातून थीं जिनका नूर रोशनी बनकर चारों तरफ़ चमका था। **जनाबे ज़ैनबअ०** उस बुलंद तरीन दर्जे पर पहुंची हुई थीं जहां तक सिर्फ़ दुनिया के अज़ीम तरीन इन्सान यानी पैग़म्बर और नबी ही पहुंच सकते हैं।

**आयतुल्लाह ख़ामेनई**

RNI No: UPHIN/2012/43577

Monthly Magazine

# मरयम

Vol:1 | Issue: 10 | December 2012

## इस महीने आप पढ़ेंगी...


| | |
|---|---|
| अच्छा घराना, अच्छी सोसाइटी | 6 |
| ज़ैनबअ० करबला से हुसैनअ० बनकर चली हैं | 9 |
| DNA का कांसेप्ट | 10 |
| औरतों का जिहाद | 12 |
| सख़ावत | 13 |
| कूफ़ियों का धोखा | 15 |
| काफ़ी | 17 |
| बच्चों की पर्सनालिटी का एहतेराम... | 18 |
| अंधेरों से उजालों की तरफ़ | 20 |
| इमाम सज्जादअ० | 22 |
| एक क़ौम की कहानी | 24 |
| इमाम ज़मानाअ० के ख़ास नायब | 26 |
| खीरे वाला | 29 |
| ईरान में पैग़म्बरों का वजूद | 30 |
| नज़्म आफ़न्दी का हिन्दी कलाम | 33 |
| शादी का पहला महीना | 35 |
| लिकोरिया को अंदेखा न करें | 39 |
| माडर्न एज और हम | 41 |



*Editor*
Mohammad Hasan Naqvi

*Editorial Board*
Nazar Abbas Rizvi
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

*Managing Editor*
Abbas Asghar Shabrez

*Executive Editor*
Fasahat Husain

*Assist. Exec. Editor*
M. Aqeel Zaidi

*Contributors*
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Fatima Qummi
Qayam Abbas
Tauseef Qambar

*Graphic Designer*
Siraj Abidi
9839099435

*Typist*
S. Sufyan Ahmad



'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।



Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India



Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

# अल्लाह तेरा शुक्र अज़ादार बनाया

چہلم حسینی

یا اباعبداللہ

■ फ़ातिमा कुम्मी

# अच्छा घराना अच्छी सोसाइटी

फ़ैमिली की मज़बूत बुनियाद के लिए औरत और मर्द को अपने घर का माहौल सच्चाई, मोहब्बत, हमदर्दी और एक-दूसरे के लिए प्यार पर रखना चाहिए लकिन इतना ही काफ़ी नहीं है बल्कि आस-पड़ोस तक भी इसकी भीनी-भीनी महक पहुंचनी चाहिए, तभी एक अच्छा समाज डेवेलप होता है। मियां-बीवी, दोनों ही की ज़िम्मेदारी है कि अपने घर को ऐसा आश्याना बनाएं जहां पर रहने वाले सभी लोगों को पूरी तरह सुकून मिलता हो। यह भी दोनों की ज़िम्मेदारी है कि अपनी फ़ैमिली की बुनियादों को अच्छी सूरत में बाक़ी रखने की हमेशा कोशिश करते रहें क्योंकि फ़ैमिली उम्र के किसी भी हिस्से में टूट सकती है। इस्लाम की नज़र में कोई भी ऐसा काम करना जुर्म और हराम है जो फ़ैमिली की बुनियादों को हिला दे या जिससे उस पर बुरा असर पड़ता हो या जो दिलों में रंजिशें और रिश्तों में दरारें डालता हो। हर वह काम जो फ़ैमिली को कमज़ोर और सुस्त करे उससे बचना ज़रुरी है। कभी-कभी हमारी छोटी-छोटी बातें जिन्हें हम इग्नोर कर देते हैं अस्ल में वही हमारी बर्बादी की वजह बन जाती हैं। इनमें से कुछ बातों का ज़िक्र हम यहां कर रह हैं।

## फ़ालतू आदतों को छोड़ना

दरअस्ल मर्द और औरत दो अलग-अलग फ़ैमिलीज़ में पले-बढ़े होते हैं। उनकी आदतें भी अलग-अलग होती हैं, कुछ ख़ास सिफ़तें मर्द में होती हैं और कुछ औरत अपने साथ लेकर आती है। यह सिर्फ़ दो अलग-अलग लोग ही नहीं होते हैं बल्कि इनके साथ इनकी ढेर सारी आदतें, रस्में, सिफ़तें, क्वालिटीज़ वग़ैरा की एक लम्बी लिस्ट भी होती है। अब कुछ आदतें दोनों की एक जैसी होती हैं और कुछ ऐसी भी होती हैं जिनके बारे में उन्हें ख़ुद को भी मालूम नहीं होता। इस तरह अगर देखा जाए तो 100 आदतें अगर मर्द की हैं तो 100 आदतें औरत की भी हो सकती हैं। इस तरह उनके बीच एक बड़ा डिफ़्रेंस आदतों और नेचर का होता है जिसकी वजह से उनका आपस में रहना मुश्किल ही नहीं होता बल्कि एक मज़बूत फ़ैमिली बनना भी बड़ा कठिन हो जाता है। सवाल यह है कि इन सब के बावजूद क्या एक मज़बूत फ़ैमिली जिसकी बुनियादें प्यार और हमदर्दी पर हों, नहीं बन सकती?नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं है। सब कुछ होते हुए भी जब हम एक फ़ैमिली की बुनियाद रखना चाहते हैं तो फिर दोनों को कुछ क़ुर्बानियां देनी पड़ती हैं। दोनों ही को अपनी कुछ आदतों को छोड़ना पड़ता है और कुछ को अपनाना भी पड़ता है। और यह उन दोनों को सोचना है कि कौन सी आदतें छोड़नी हैं और कौन सी अपनानी हैं। आपने देखा होगा कि कभी-कभी मियां-बीवी दोनों अपनी-अपनी बात पर डटे रहते हैं, जैसे बीवी कहती है कि मेरे मायके में यह काम ऐसे होता है और मर्द अड़ जाता है कि हमारे यहां उंचा बोलकर औरत को चुप कराने का कल्चर है। वह सोचते हैं कि हम मर्द हैं, अगर हम आराम से बोलेंगे तो हमारी बात में वज़न पैदा नहीं होगा। इसलिए अपने फेफड़ों का सारा ज़ोर लगाकर पूरी ताक़त से आवाज़ निकाल कर अपनी बात कहते हैं। ऐसा

बिल्कुल नहीं करना चाहिए क्योंकि ग़लत बात कितना भी ज़ोर लगाकर कही जाए, ग़लत ही रहती है। और सही बात चाहे कितने ही आराम से कहें, वह अच्छी ही रहती है।

इसी तरह हम देखते हैं कि कुछ लोग बच्चों को भी चींख़कर बुलाते हैं और ग़लत बातें भी चिल्ला-चिल्लाकर उन पर थोप देते हैं। वह उनकी चींख़ से दब तो जाते हैं मगर ग़लत बात अपना ग़लत असर ज़रुर छोड़ती है। कभी-कभी इस तरह की छोटी सी आदत पूरी फ़ैमिली के लिए बहुत नुक़सानदेह हो जाती है। साथ ही पूरे समाज को भी करप्ट कर देती है।

### अपनी ग़लती मानना

एक और बुरी आदत है जो हमारे कल्चर में पाई जाती है। अगर कोई इंसान हमारी ग़लती हमें बताता है तो हमें ग़ुस्सा आ जाता है और बहुत बुरा लगता है। इसके अपोज़िट अगर कोई हमारी ज़्यादा तारीफ़ कर दे जैसे हमें कोई कह दे कि आप तो बड़ी मोमिना हैं तो हमें बहुत अच्छा लगता है। चाहे हम सच में न भी हों। हदीस में आया है कि मोमिन मोमिन का आईना होता है। इसका मतलब है कि हम एक-दूसरे के लिए ट्रांस्पेरेंट आईना बनें। अच्छा आईना हमारे चेहरे पर लगी हर चीज़ दिखा देता है। हमारी इमेज बिल्कुल वैसी ही दिखाता है जैसी वह होती है। अगर हमारे फ़ेस पर कुछ लगा हो और हमारा आईना हमें न बताए और हम किसी प्रोग्राम में ऐसे ही चले जाएं तो ज़रा सोचिए! इस आईने की ग़ल्ती की वजह से हमें कितनी शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। आईना हमारा एक्सटर्नल पार्ट दिखाता है जबकि मोमिन वह आईना होता है जो हमें हमारी पूरी रुह की तस्वीर दिखाता है। एक मोमिन ही हमदर्दी के साथ यह बता सकता है कि आपके अंदर यह रुहानी कमज़ोरी है। लेकिन उसकी बात पर हमें ग़ुस्सा आ जाता है। हमें इस आइने को थेंक्स कहना चाहिए न कि क़यामत तक उससे बॉयकाट कर लेना चाहिए। हमें इस आइने को फूलों का तोहफ़ा देना चाहिए। जो हमें हमारी तस्वीर दिखाए हमें उससे मदद मांगनी चाहिए कि बताओ हम अपना यह ऐब कैसे ख़त्म करें। साथ ही ग़लती बताने वाले को भी इस चीज़ का ख़्याल रखना चाहिए कि किसी को उसकी ग़लती बतानी हो तो अकेले में बताए। उसे ऐसी जगह पर ले जाए जहां कोई देख न रहा हो और कोई सुन न रहा हो। उसकी इस्लाह के लिए उसे बताएं, न कि सब लोगों के सामने बता कर उसे बदनाम या शर्मिंदा करें। हमें किसी की ग़लती सिर्फ़ उसी को बतानी है, उसे बदनाम नहीं करना है क्योंकि जो किसी की इस्लाह के लिए तन्हाई में उसे बताए वह उसका दोस्त है लेकिन जो बदनाम करे वह दोस्त नहीं हो सकता। हमें भी ग़लत आदतों की तरफ़ इशारा करने वाले का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने हमें वक़्त पर बता दिया वरना हमारा यह ऐब सारी दुनिया को नज़र आ जाता। उसके बाद अपना यह ऐब हमें दूर भी कर लेना चाहिए। अपनी ग़लती से सीख लेकर ही इंसान बुलंदियों तक पहुंचता है।

### बुरी आदत को छुड़ाना

कोई भी आदत एक दिन के अंदर नहीं छोड़ी जा सकती जैसे अगर किसी को सिग्रेट पीने की आदत हो और उससे कहा जाए कि आज ही तुम अपनी यह आदत छोड़ दो तो यह एक दिन में नहीं हो सकता बल्कि धीरे-धीरे यह आदत छुड़ाई जा सकती है। एक-दो दिन में यह आदत छुड़ाई गई तो बड़ी मुश्किल होगी। इसका पहला असर यह होगा कि उसकी भूख ख़राब हो जाएगी, नींद ख़राब हो जाएगी, सिर में दर्द होगा, घबराहट होगी, चिड़चिड़ापन शुरु हो जाएगा, झगड़े शुरु हो जाएंगे यहां तक कि पूरा नर्वस सिस्टम बिगड़ जाएगा क्योंकि वह पिछले 15-20 साल से सिग्रट पी रहा है और उसका जिस्म अब इसका आदी हो गया है। इसलिए धीरे-धीरे

# स० रसूल की ख़िदमत में आमाल का पेश किया जाना

■ डॉ. कल्बे सिब्तैन नूरी

*इमाम जाफ़र सादिक़अ० ने फ़रमाया है, "हर रोज़ सुबह के वक़्त नेक और बुरे बंदों के आमाल रसूले ख़ुदास० के हुज़ूर में पेश किए जाते हैं। ख़बरदार! कहीं ऐसा न हो कि तुम में से किसी के बुरे आमाल रसूलस० के सामने पेश किए जाएं।*

*(बिहारुल अनवार, जिल्द-17)*

*रसूले ख़ुदास० क्योंकि उम्मत के रसूल हैं और उम्मत आपकी रिसालत का कलमा पढ़ती है इसलिए आपकी ख़िदमत में उम्मत के आमाल पेश किए जाते हैं। इस हदीस से अल्लाह के नज़दीक रसूले ख़ुदा की अज़मत का भी एहसास होता है।*

*रसूले ख़ुदास० के अलावा हर ज़माने के इमाम जो आप ही के जानशीन होते हैं, की ख़िदमत में भी आमाल पेश किए जाने का ज़िक्र दूसरी रिवायतों में मिलता है। रसूले ख़ुदास० जब उम्मत के अच्छे और नेक आमाल को देखते हैं तो ख़ुश होते हैं और जब बुरे आमाल को देखते हैं तो फ़ितरी तौर पर दुखी और रंजीदा होते हैं।*

इस आदत को छोड़ना पड़ेगा।

इसी तरह इंसान की बहुत सी कल्चरल आदतें बड़े होने के साथ-साथ पक्की बन जाती हैं। जैसे झूठ बोलना और ऐसी बहुत सी रस्में जो हमारे अंदर रच-बस जाती हैं और गहराई तक जड़ पकड़ लेती हैं कि फिर अगर हम से वह काम करने के लिए कहा जाऐ तो हमें वह पहाड़ लगता है। जैसे सच बोलना कुछ लागों को पहाड़ लगता है क्योंकि बचपन में मां-बाप के सामने सच बोलने से फंस जाते थे और झूठ से जान बच जाती थी। इसलिए यह आदत धीरे-धीरे पक्की हो गई। याद रहे कि बच्चों को सच बोलने पर मारने-पीटने या डांटने के बजाए छोड़ देना चाहिए, चाहे उसने नुक़सान ही क्यों न किया हो। वरना आइंदा वह झूठ का सहारा लेकर अपनी जान बचाएगा और हमारी ही वजह से उसकी यह आदत पड़ जाएगी। हमें अपनी औलाद को झूठ से दूर रखना है क्योंकि झूठ से हज़ार बुराईयां जन्म लेती हैं।

## ज़बान का ज़ख़्म

कहते हैं कि चोट का ज़ख़्म तो भर जाता है लेकिन ज़बान का ज़ख़्म कभी नहीं भरता। हमें ऐसी ज़बान से परहेज़ करना चाहिए जिससे किसी का दिल दुखता हो। एक-दूसरे के लिए ताने वाली ज़बान का इस्तेमाल भी सही नहीं है। इस्लाम में इसके लिए सख़्ती से मना किया गया है। ऐसे काम हराम हैं जिनसे आपस में दिलों में रंजिशें पैदा होती हों, दूरियां बढ़ती हों, जिनसे आपस में दरारें पड़ती हों। ख़ास तौर पर बहू और सास का रिश्ता एक ऐसा रिश्ता है जिसमें एक-दूसरे के लिए ताने की ज़बान इस्तेमाल होती है। इन दोनों के बीच आमतौर पर हमेशा एक जंग चला करती है। क़ुरआन में है कि दूसरों के दिलों को चोट पहुंचाकर ख़ुश होने वाले लोगों को दिल का मर्ज़ होता है। बीमारियों में सबसे ख़तरनाक बीमारी दिल की बीमारी होती है। इसीलिए क़ुरआन ने इसी ख़तरे की तरफ़ इशारा किया है कि ख़बरदार तुम दिल के मरीज़ न बन जाना।

(सूरए बक़रा/10)

आपने बच्चों को देखा होगा कि कभी-कभी अगर एक बच्चा गिरता है तो दूसरे बच्चे हंसने लगते हैं। यह आदत ख़तरनाक बीमारी है। यह अच्छी आदत नहीं है। किसी के गिरने पर हमारे दिल में हमदर्दी पैदा होनी चाहिए। आगे बढ़कर उसको उठाना चाहिए, उससे पूछना चाहिए कि उसे चोट तो नहीं लगी। उसकी देखभाल करनी चाहिए। जिस तरह एक बच्चे के गिरने और चोट लगने पर मां को तकलीफ़ होती है वैसे ही फ़ीलिंग हमारे दिल में भी सबके लिए होनी चाहिए। जब तक चोट सही नहीं होती है मां की बैचेनी ख़त्म नहीं होती है, मां परेशान रहती है। इसी तरह अगर कोई इंसान परेशान हो तो हमें भी उसके लिए परेशान होना चाहिए। जल्दी से आगे बढ़कर उसकी परेशानी दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। उसकी परेशानी से ख़ुश होना इंसानियत नहीं है।

ऊपर जो कुछ बयान किया गया है अगर हम उसे अपनी ज़िंदगी में अपना लें तो इससे सिर्फ़ हमारी शादी शुदा ज़िंदगी ही ख़ुशगवार नहीं होगी बल्कि हमारे आस-पास का माहौल भी अच्छा हो जाएगा क्योंकि जो बातें कही गई हैं वह सारी सोसाइटी पर एप्लाई होती हैं और सारे समाज के लिए फ़ाएदेमंद हैं।

# ज़ैनब[स०] करबला से हुसैन[अ०] बनकर चली हैं

**करबला की क़ाफ़िला सालारः ज़ैनब[स०]**

जनाबे ज़ैनब[अ०] उस क़ाफ़िले की काफ़िला सालार हैं जिसके क़ाफ़िला सालार इमाम हुसैन[अ०] थे। जिसमें हज़रत अब्बास[अ०], जनाबे अली अकबर[अ०], बनी हाशिम और इमाम हुसैन[अ०] के दूसरे बावफ़ा साथी थे, वह ग़ैरतमंद लोग जिन पर अहलेबैत[अ०] और बच्चों को नाज़ था, जिनके होने से औरतों और बच्चों को एक ढारस थी, एक सुकून था।

इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों का दुश्मन पर ऐसा दबदबा था कि इमाम[अ०] की ज़िंदगी के आख़िरी वक़्त तक दुश्मन ख़ेमों के पास तक नहीं भटक सका था। जंग के बीच इमाम हुसैन[अ०] की, 'ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह' की आवाज़ से बच्चों और औरतों की ढारस बंधी हुई थी और इमाम हुसैन[अ०] इसी तरह उन्हें तसल्ली दे रहे थे।

दिल के टुकड़ों की शहादत और ख़ेमों के उजड़ने के बाद अब इन ग़मज़दा औरतों और बच्चों को दुश्मन के ज़ुल्म को बर्दाश्त करना है और ख़ून में डूबी हुई शहीदों की पामाल लाशों का नज़ारा करना है। इन मुसीबत ज़दा लोगों का क़ाफ़िला रहती दुनिया तक चलता रहेगा और इसकी फ़रियाद आसमानों की बुलन्दी तक यूंही पहुँचती रहेगी। ये लोग उस आसमानी इन्क़ेलाब के पैग़ाम को पहुँचाने वाले हैं जिसकी क़ीमत बेहतरीन इंसानों के ख़ून से अदा की गई है।

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] के बाद अब इस क़ाफ़िले की सालार एक ऐसी ख़ातून हैं जिनकी हिम्मत और मज़बूती के सामने पहाड़ भी शर्मिंदा और जिनके सब्र पर फ़रिश्ते भी हैरत में हैं। ये अली[अ०] की बेटी और फ़ातिमा[अ०] की लख़्ते जिगर है जो बनी उमैया के ज़ुल्म के महलों की बुनियाद हिलाने वाली है।

ये ज़ैनब हैं जो अपने इमाम के हुक्म से अली व फ़ातिमा[स०] के घराने के इस क़ाफ़िले की क़ाफ़िला सालार हैं, जो बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाने के बाद इमाम हुसैन[अ०] और उनके वफ़ादार सहाबियों के पैग़ाम को लोगों तक पहुँचने वाली हैं।

अब ये मज़लूम बच्चों और औरतों का क़ाफ़िला, जिसके चहेते मारे जा चुके हैं, ज़ैनब[स०] की क़ाफ़िला सालारी में अपना तारीख़ी सफ़र शुरू कर रहा है।

**कूफ़े की तरफ़**

ग्यारह मोहर्रम, 61 हिजरी को अहलेबैत[अ०] के असीरों का क़ाफ़िला करबला से कूफ़े की तरफ़ चल दिया। क़ाफ़िले की ज़िम्मेदारी इमाम सज्जाद[अ०] के हाथ में है क्योंकि आप इमाम हैं और आपका हुक्म मानना सब पर वाजिब है। क़ाफ़िला सालार ज़ैनबे कुबरा[अ०] हैं जो इमाम सज्जाद की फुफी हैं और औरतों में सबसे बुज़ुर्ग हैं।

ज़ाहिर है कि इन औरतों और बच्चों को संभालना आसान काम नहीं है जिन्होंने आशूर के दिन ज़ुल्मो सितम और ग़म बर्दाश्त किए थे, दिल को हिला देने वाले मंज़र अपनी आँखों से देखे थे, अपने अज़ीज़ों के दाग़ उठाए थे और अब वह बेरहम दुश्मनों के घेरे में हैं और इन्हें ऊँट की नंगी पीठ पर सवार कर के क़ैदियों की तरह ले जाया जा रहा है।

अब ज़ैनब[अ०] को औरतों के एहसास और जज़्बात का भी ख़याल रखना है और इसी हाल में इमाम सज्जाद की हिफ़ाज़त भी करना है जो इस क़ाफ़िले में ज़ैनब[स०] की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है। पैग़ाम पहुंचाने का बोझ आप पर सबसे ज़्यादा है लेकिन हौसले में कोई कमी नहीं है।

और जनाबे ज़ैनब ने यह कर दिखाया...इमामे हुसैन[अ०] के मक़सद को ज़िन्दा कर के हज़रत ज़ैनब[अ०] ने तारीख़ का बेमिसाल नमूना पेश किया है और बनी उमैया के घराने के ज़ुल्मों को जग-ज़ाहिर किया है। साथ ही यज़ीद के महल को हमेशा-हमेशा के लिए ढा कर रख दिया है।

सै. आले हाशिम रिज़वी
aleyhashim@yahoo.co.in

# DNA का कांसेप्ट

कुछ दिन पहले हमारे मुल्क के एक बहुत पुराने सीनियर और मशहूर पॉलिटीशियन का नाम उनकी डी.एन.ए. रिर्पोट की वजह से काफ़ी न्यूज़ और चर्चा में रहा। उनकी डी.एन.ए. रिर्पोट के ज़रिए उस सियासी लीडर का एक ऐसा सच सामने आया कि पूरा मुल्क हैरत में पड़ गया। बहरहाल मेरे इस आर्टिकल का टॉपिक वह पॉलिटीशियन नहीं हैं बल्कि डी.एन.ए. कांसेप्ट है। आख़िर है क्या डी.एन.ए.? साइंस के मुताबिक़ हर इन्सान का क्रिएशन उसके माँ-बाप के 30-30 क्रोमोसोम्स से मिलकर बनने वाले एक सेल से होता है जिसे ज़ाइगोट कहा जाता है। यह ज़ाइगोट वुजूद में आते ही अपने जैसी कापियाँ बनाना शुरु कर देता है। एक से दो, दो से चार, चार से आठ, आठ से सोलह, इस तरह लगभग नौ महीने में एक मुकम्मल इन्सानी ज़िंदगी वुजूद में आ जाती है। यह इन्सान जब बच्चे की शक्ल में पैदा होता है तो ढेर सारी सेल्स का एक कलेक्शन होता है। ज़ाइगोट के ज़रिए सेल्स का लगातार अपने जैसी कापियाँ तैयार करना और तेज़ी से अपनी तादाद बढ़ाना अपने आप में यक़ीनन एक ख़ुदाई करिश्मा है लेकिन उससे भी बड़ा मोजिज़ा हर सेल के अंदर मौजूद उसका डी.एन.ए. है। डी.एन.ए. यानी डीआक्सीरीबो न्यूक्लिक एसिड का शेप एक-दूसरे से लिपटी हुई बहुत ही बारीक सीढ़ी नुमा दो डोरियों जैसा होता है। बच्चे की शुरुआत यानी उसके माँ-बाप के क्रोमोसोम्स से ज़ाइगोट, ज़ाइगोट से उसकी कापियाँ बनना, फिर एक ज़िंदगी के वुजूद में आने का सारा प्रोग्राम इसी डी.एन.ए. में स्टोर होता है। बच्चे के जिस्म की बनावट और क्रिएशन का पूरा नक़्शा डी.एन.ए. में मौजूद होता है। उसके अंदर सिर्फ़ बच्चे की ही नहीं बल्कि उसके माँ-बाप की भी पूरी जानकारी रहती है।

डी.एन.ए. प्रोफ़ाइलिंग यानी डी.एन.ए. जाँच एक ऐसी टेक्नीक है जो फ़ॉरेंसिक साइंस में बहुत ज़्यादा कारगर और इस्तेमाल होती है। इस टेक्नीक को पहली बार 1984 में सर एलिक जेफ़री ने लीसेस्टर युनिवर्सिटी, इंग्लैंड में इस्तेमाल किया था। बाद में इस जाँच को आई.सी.आई. कम्पनी ने बड़े पैमाने पर लाँच किया। इस जाँच में सबसे पहले इन्सानी जिस्म का कोई ऐसा नमूना लिया जाता है जिसमें उस शख़्स का डी.एन.ए. मौजूद हो सकता है। फिर पालीमरेज चेन रि-एक्शन (Polymerase Chain Reaction) के ज़रिए उसकी लाखों कापियाँ बनाकर एक फ़ोटोग्राफ़ तैयार किया जाता है। जिसकी मदद से साइंसटिस्ट उस डी.एन.ए. वाले शख़्स की पूरी रिपोर्ट बना लेते हैं जिसमें उसके माँ-बाप की भी जानकारी होती है। कितनी हैरानी की बात है कि ख़ुदा ने हर इन्सान की कम्पलीट जानकारी और उसकी नस्ल से जुड़ी मालूमात एक बहुत छोटी सी चीज़ जिसे माइक्रोस्कोप के बिना देखना भी मुमकिन नहीं है, उसमें समेट कर रख दी है। लेकिन आपको यह जानकर बेहद हैरानी

होगी कि अगर डी.एन.ए. की एक-दूसरे पर लिपटी हुई दोनों डोरियों को निकाल कर एक लाइन में रख दिया जाए तो यह लाइन ज़मीन से आसमान तक की दूरी तय कर लेगी।

डी.एन.ए. जाँच की शुरुआत तो 1984 से हुई थी लेकिन डी.एन.ए. की खोज 1953 में जेम्स वाटसन और फ्रेंसिस क्रिक नाम के साइंटिस्ट्स ने की थी। उसी खोज के बाद इन्सानी जीन्स से जुड़ी दूसरी रिसर्च भी होने लगीं। इस रिसर्च ने बाक़ायदा ज़ीन इंजीनियरिंग की शुरुआत कर दी, जिसमें जीन्स का फेरबदल भी किया जाने लगा। ऐसी बहुत सी बीमारियाँ थीं जो नस्ल दर नस्ल चला करती थीं लेकिन जीन्स के फेरबदल से अब उनका इलाज भी मुमकिन हो गया है। डी.एन.ए. में 50,000 जींस समाए होते हैं। एक जीन में लगभग 1000 अमीनो एसिड होते हैं। जीन की पहचान कर लेने के बाद उनके ज़रिए बनाई जाने वाली प्रोटीन की पहचान भी साइंटिस्ट्स के लिए आसान हो गई है। इस सिलसिले से जुड़ी रिसर्च आने वाले वक़्त में मेडिकल साइंस को बहुत ज़्यादा हाइटेक बना देगी। डी.एन.ए. के टीके बनाने का रिसर्च वर्क भी शुरु हो चुका है। साइंटिस्ट्स को उम्मीद है कि वह इस टीके के ज़रिए इन्सान की औसत उम्र को बढ़ाने में भी बड़ी कामयाबी हासिल कर लेंगे।

इन तमाम बातों से साफ़ ज़ाहिर है कि डी.एन.ए. कांसेप्ट बहुत अहमियत रखता है। अब सवाल उठता है कि क्या इस अहम कांसेप्ट से रिलेटेड कोई ज़िक्र या इशारा इस्लामी किताबों में भी है?शेख़ सदूक़[अ०र०] की किताब इ-ल-लुश्शराए के मुताबिक़ रसूले ख़ुदा[स०] से किसी ने पूछा कि जनाबत की वजह से ग़ुस्ल का हुक्म क्यों दिया गया है?रसूले ख़ुदा[स०] ने जवाब दिया कि जनाबत इन्सान की ज़ात से निकलती है यानी उसके पूरे जिस्म से बाहर निकल कर आती है। इसलिए पूरे जिस्म का पाक होना ज़रूरी है, सिर्फ़ उसे धो लेना काफ़ी नहीं है। रसूले ख़ुदा[स०] के इस जवाब से पता चलता है कि जनाबत हमारे पूरे जिस्म को रि-प्रेज़ेंट करती है। दरअसल इस जवाब में डी.एन.ए. की थ्योरी से जुड़ा हुआ एक हल्का सा इशारा यक़ीनी तौर पर छुपा हुआ है। जिसे उस ज़माने के लोगों के लिए समझ पाना नामुमकिन था लेकिन आज की मार्डन साइंस की रिसर्च रसूले ख़ुदा[स०] के जवाब की गहराई को साफ़ ज़ाहिर करती है। आज से 60-70 साल पहले तक जिस डी.एन.ए. कांसेप्ट से दुनिया बिल्कुल अंजान थी। उस पर पड़े राज़ के पर्दे मार्डन साइंस की रिसर्च और अल्लाह की पैदा की हुई अक़्ल का बेहतरीन इस्तेमाल करने वाले साइंसटिस्ट लगातार हटाते जा रहे हैं। ●

# सुनहरी बातें

## इमाम हुसैन[अ०] फ़रमाते हैं:-

1- *हम अहलेबैत लोगों की मारफ़त के मुताबिक़ उनकी बख़शिश करते हैं।*

2- *सबसे बड़ा सख़ी वह इंसान है जो किसी ऐसे को अता करे जिस से कुछ भी मिलने की उम्मीद न हो।*

3- *सबसे बड़ा माफ़ करने वाला इंसान वह है जो ताक़तवर होने के बावजूद माफ़ कर दे।*

4- *सबसे ज़्यादा सिला-ए-रहम (मेल-जोल) करने वाला इंसान वह है जो क़ता-ए-रहम (नाता तोड़ने वालों) करने वालों से मिल-जुल कर रहे।*

5- *जो किसी मोमिन की परेशानी और तकलीफ़ को दूर करता है, ख़ुदा उसकी दुनिया व आख़िरत के मुश्किलों और ग़मों को दूर करेगा।*

6- *ज़िल्लत की ज़िंदगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है।*

7- *लोगों का अपनी ज़रूरतों के लिए तुम्हारे पास आना ख़ुदा की एक नेमत है। इसलिए इस नेमत पर परेशान मत हो वरना ये नेमत, निक़मत में बदल जाएगी।*

8- *सख़ावत और बख़शिश करने वाला सरदार बन जाता है और कंजूसी करने वाला ज़लील व रुसवा हो जाता है।*

9- *मोमिन न बुराई करता है और न ही बहाने बनाता है जबकि मुनाफ़िक़ हर रोज़ बुराई करता है और हर रोज़ बहाने बनाता है।*

10- *दोस्त वह है जो तुम्हें बुराई से बचाए और दुश्मन वह है जो तुम्हें बुराईयों का शौक़ दिलाए।*

11- *मैं मौत को कामयाबी और ज़ालिमों के साथ ज़िंदगी को मलामत के लायक़ समझता हूँ।* ●

# औरतों का जिहाद

घर और घराना

■ डॉ. पैकर जाफ़री उतरौलवी

हज़रत अली[अ] फ़रमाते हैं, ''औरत का जिहाद यह है कि शौहर की निगेहदाश्त और उसका ध्यान अच्छी तरह से रखे।''

(बिहार, जिल्द-103)

इस्लाम की नज़र में यह ज़िम्मेदारी इतनी अहम है कि इसे ख़ुदा की राह में जिहाद के बराबर बताया गया है।

शौहर का ध्यान यानी उसके हक़ों को पूरा करना। लेकिन यह नहीं सोच लेना चाहिए कि यह काम बहुत आसान है और हर औरत इस अहम और बड़ी ज़िम्मेदारी को बख़ूबी पूरा कर सकती है। इसके लिए काम की जानकारी, सलीक़ा और एक ख़ास इल्म व तवज्जो की ज़रूरत है जिसे यहाँ मिसाल के तौर पर पेश किया जा रहा है।

जैसा कि सब जानते हैं कि शादी और मर्द के लिए फ़ैमिली के मक़सदों में से एक मक़सद सेक्चुअल डिज़ायर्स की भरपाई और इस नेचुरल डिमांड को पूरा करना है। अगर मर्द की यह नेचुरल डिमांड घर के अंदर पूरी न हुई तो मर्द मजबूर होकर घर से बाहर अख़लाक़ी फ़साद और बुराईयों की गोद में जा बैठेगा या फिर उसमें महरूमियत का एहसास पैदा हो जाएगा, जो मियां-बीवी की ज़िंदगी की बर्बादी का आग़ाज़ होगा जिस से दोनों ही को नुक़सान पहुँचेगा।

यही वजह है कि मर्द अपनी बीवी के एहतेराम और उसकी मोहब्बत का मोहताज होता है। इसलिए औरत को चाहिए कि अपनी मोहब्बत का रिश्ता भी शौहर की गर्दन में डाल दे। इस तरह वह घर और फ़ैमिली को अपने साथ बांधे रख सकती है। अगर औरत मर्द का एहतेराम करेगी तो मर्द भी यक़ीनन उसका एहतेराम करेगा। ख़ुदा न करे कोई बीवी अपने शौहर को बेइज़्ज़त करे। हर इन्सान में कुछ न कुछ कमियां तो रहती हैं। शौहर को बेइज़्ज़त करना असल में ख़ुद अपने आपको बे-आबरू करने के बराबर है क्योंकि शौहर और बीवी दोनों शादी की बुनियाद पर ही एक हुए हैं। शौहर सुबह से शाम तक इस बात के लिए जानतोड़ कोशिश करता है कि औरत के आराम के लिए ज़्यादा से ज़्यादा सामान मोहैय्या कर दे। ख़ुदा नख़्वास्ता ऐसा न हो कि बीवी उसके कमाए हुए पैसे से अपनी आराइश और सिंगार करे और नामहरम मर्दों के लिए अपनी आराइश और अपने हुस्न को खुला छोड़ दे। इसीलिए इस्लाम ने आराइश व ज़ीनत को सिर्फ़ शौहर के लिए जाएज़ कहा है और नामहरमों के लिए हराम। अगर औरत सिर्फ़ अपने शौहर की होगी तो मर्द भी सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी का होकर रहेगा। अगर औरत चाहती है कि वह ख़ुद, उसका शौहर और उसके बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी ज़िंदगी बसर करें तो उसे अपने अख़लाक़ के अच्छे से अच्छा होने पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। शौहर से हमेशा हंस कर और ख़ुश-ख़ुर्रम रह कर मिले, बुरे अख़लाक़ से पेश न आए। जैसे शौहर दिन भर के बाद जब शाम को घर वापस हो तो उसका दरवाज़े पर मुस्कुराहट के साथ इस्तेक़बाल करे और अगर शौहर के हाथ में कोई सामान है तो बढ़कर अपने हाथों में थाम ले, उसे पानी पेश करे। दिन भर का हाल-चाल पूछे, न कि ऐसी बातें शुरु कर दे जिस से दिन भर के थके-हारे दिल व दिमाग़ को आराम के बजाए और परेशानी में डाल दे यानी आम तरह की उलझनों, लड़ाई-झगड़ो और कशमकश से बचना चाहिए। ज़िंदगी की मुश्किलें तो सभी को आती हैं, मुश्किलें और मसाएल बदअख़लाक़ी से दूर नहीं होते। अपने अच्छे अख़लाक़ और किरदार से ही शौहर की कमियों को दूर किया जा सकता है। औरत को चाहिए कि सुबह में शौहर को नौकरी या काम पर जाते वक़्त मुस्कुराहट के साथ ख़ुदा हाफ़िज़ करे। उसकी इजाज़त के बिना घर से बाहर न निकले। उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी को घर में आने की इजाज़त न दे क्योंकि औरत घर में शौहर की अमानतदार होती है। इसलिए उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी को कोई चीज़ भी न दे।

इस तरह जब औरत यानी बीवी अपने शौहर का भरोसा और एतेमाद जीत लेगी तो इन्शाअल्लाह ज़िंदगी के सारे मसाएल बड़े ख़ुशगवार तरीक़े से हल होते रहेंगे और फिर ज़िंदगी हमेशा ख़ुश गवार गुज़रेगी। इसीलिए औरत को बड़ी समझदारी, अक़लमंदी और सूझबूझ से क़ुरबानी, लगन और ख़ुद एतेमादी के साथ ज़िंदगी के एक-एक क़दम को तय करना चाहिए। अगर अख़लाक़ का सिक्का चल गया तो ख़ुशियों की कुंजी आपके हाथ में होगी। ●

अच्छी-अच्छी बातें

# सख़ावत

■ हुज्जतुल इस्लाम मीसम ज़ैदी

एक बहुत ही सख़ी इन्सान का कहना है, "मैंने सख़ावत बचपन में अपनी माँ से सीखी थी क्योंकि मेरी माँ का उसूल यह था कि जब भी मैं स्कूल के लिए निकलता था तो वह मेरा सदक़ा निकालने के लिए मुझे थेड़ी सी रक़म देती थीं और कहती थीं कि इस से सदक़ा निकाल दो। बचपन के इस अमल ने मुझे ज़िंदगी भर के लिए बख़शिश और अता करने वाला मिज़ाज दे दिया है। मेरी माँ ने अपने इस छोटे से काम के ज़रिए हमें हमेशा के लिए समझा दिया कि ख़ुद से पहले दूसरों की फ़िक्र करना चाहिए।"

सख़ावत ऐसी बेहतरीन सिफ़त है जो ख़ुदा को बहुत पसंद है। हिस्ट्री में मिलता है कि यमन का एक क़ाफ़िला रसूले इस्लाम[स०] के पास पहुँचा जिसमें से एक शख़्स ने रसूले इस्लाम[स०] से गुस्ताख़ी की। पैग़म्बरे इस्लाम[स०] को ग़ुस्सा तो बहुत आया मगर आपने बर्दाश्त कर लिया। कुछ देर भी नहीं गुज़री थी कि जिब्रईले अमीन वही लेकर रसूले इस्लाम[स०] के पास आए और कहा, "इस शख़्स में सख़ावत की सिफ़त पाई जाती है।"

रसूले इस्लाम[स०] इस बात को सुनते ही अपने ग़ुस्से को पी गए और आपने उस शख़्स से कहा, "अगर जिब्रईले अमीन तुम्हारी सख़ावत के बारे में मुझे ख़बर न देते तो मैं तुम्हारे साथ ऐसा सख़्त बरताव करता जो दूसरों के लिए इबरत बन जाता।"

उस शख़्स ने जवाब दिया, "क्या आपका ख़ुदा सख़ावत को पसंद करता है?" रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया, "हाँ।"

यह सुनते ही फ़ौरन उसने कहा, "अशहदु अल-ला-इला-ह इल लल्लाह व अशहदु..." (मैं गवाही देता हूँ कि ख़ुदाए वहदहू ला शरीक के अलावा कोई माबूद नहीं है और आप उसके बरहक़ रसूल हैं।)।

कुछ लोग यह सोचते हैं कि सख़ावत करने के लिए दौलत की ज़रूरत है जबकि हक़ीक़त यह है कि इन्सान के पास जो कुछ है अगर उस में से ही मुसलसल देता रहे तो यह भी सख़ावत है और अगर अपने लिए रखे बग़ैर दे दे तो यह ईसार है जो कि सख़ावत से भी बड़ी सिफ़त है।

सख़ावत का मिज़ाज उसी शख़्स में ज़्यादा पाया जाता है जो आख़िरत पर ज़्यादा यक़ीन रखता है। हर चीज़ का हक़ीक़ी वारिस और मालिक ख़ुदा है। हम जब इस दुनिया में आए तो हमारे हाथों में कुछ भी नहीं था और जब इस दुनिया से जाएंगे तो भी दुनियावी चीज़ों से हमारे हाथ ख़ाली रहेंगे। अगर इन्सान में सिर्फ़ इतना ही ख़याल पैदा हो जाए तो इन्सान सख़ावत में कभी भी कमी नहीं करेगा। सख़ावत करने के लिए मिज़ाज में अता व बख़शिश का पाया जाना ज़रूरी है, न कि मालो दौलत का। कभी-कभी बस बहुत ही छोटी सी रक़म या छोटी सी चीज़ इन्सान के पास होती है और उसके अलावा कुछ और नहीं होता। ऐसे मौक़े के लिए ही मासूमीन ने फ़रमाया है कि सदक़ा देने में बहुत ज़्यादा सवाब पाया जाता है।

बुज़ुर्गों ने यह वाक़िआ नक़ल किया है कि अल्लामा अदील अख़तर मरहूम के घर में किसी मौक़े पर तंगदस्ती की वजह से परेशानियाँ थीं। जब उनकी बीवी ने उन से तज़किरा किया और कहा कि कोई रास्ता निकालिए तो उन्होंने कहा कि मेरे सफ़र का संदूक़चा ले आओ। जब संदूक़चे को झाड़ा तो उसमें से सिर्फ़ चार आने निकले। उन्होंने वह रक़म निकाल कर अपने बेटे को दे दी और कहा कि फ़ुलाँ जगह एक ग़रीब ज़रूरतमंद मोमिन रहता है, यह रक़म उसे जाकर दे दो क्योंकि उसकी ज़रूरतें मुझ से ज़्यादा हैं और परेशानी व तंगदस्ती में सदक़ा देने का ज़्यादा सवाब है।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि देने वाले का अज्र और सवाब दी जाने वाली रक़म की मिक़दार के मुक़ाबले में नहीं बल्कि कुल रक़म से निकाली जाने वाली रक़म को देखकर दिया जाता है।

मरयम
Dec 2012
Monthly Coupon
ड्रॉ में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है, ''सख़ावत और हया बेहतरीन सिफ़तें हैं।''

साथ ही आप ने यह भी फ़रमाया है, ''सख़ावत पैग़म्बरों की सिफ़त है।''

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, ''ख़ुदावंदे आलम को सख़ावत करने वाला जाहिल, इबादत करने वाले कंजूस से ज़्यादा पसंद है।''

क़ुरआन मजीद में आया है, **''वह लोग जो ख़ुशहाली और तंगदस्ती में इन्फ़ाक़ करते हैं और दूसरों की ग़लतियों को माफ़ कर दिया करते हैं और ख़ुदा नेकी करने वालों को पसंद करता है।''**

इसी तरह दूसरी जगह है, **''जो लोग अपने माल को दिन व रात पिन्हाँ व आश्कार इन्फ़ाक़ करते हैं परवरदिगारे आलम के नज़दीक उनका अज्र महफ़ूज़ है न उन पर किसी चीज़ का ख़ौफ़ तारी होता है और न वह किसी चीज़ से ग़मगीन होते हैं।''**

हज़रत अली[अ०] ने सख़ावत की अहमियत इस तरह से बताई है, ''ईमान ऐसा पेड़ है जिसकी जड़ें यक़ीन, टहनियां परहेज़गारी, जिसकी कलियाँ हया और फल सख़ावत है।''

वैसे सख़ावत की भी अपनी एक हद है वरना इन्सान फ़ुज़ूल ख़र्ची की हदों में दाख़िल हो जाता है। इमाम हसन असकरी[अ०] ने फ़रमाया है, ''सख़ावत करने की एक मिक़दार है। अगर इन्सान उस मिक़दार और हद से आगे बढ़ जाए तो वह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों में गिना जाएगा।''

इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया है, ''सख़ी बनना, फ़ुज़ूल ख़र्च बनना नहीं है।''

एक दूसरी जगह पर हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है, ''सख़ावत दिलों में मोहब्बत का बीज डालती है।'' ●




# करबला ज़ुल्म से मुक़ाबला

*मोहर्रम और सफ़र, तलवार पर ख़ून की जीत के महीने हैं। ये वह महीने हैं जो दुनिया की तमाम नसलों और हर स्कूल आफ़ थॉट के मानने वालों को पैग़ाम देते हैं कि ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो आज़ाद रह कर गुज़ारो, ज़ुल्मो सितम के सामने कभी भी सर न झुकाओ और न ही ज़िल्लत भरी ज़िंदगी बर्दाश्त करो क्योंकि ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है। इस में कोई शक नहीं है कि अगर करबला न होती तो आज ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करने के लिए किसी में भी हिम्मत न होती। करबला ने दुनिया के तमाम इन्सानों को ये हौसला दिया कि वह कम होने के बावजूद भी ज़ालिमों की ज़्यादती से टकरा सकते हैं। अगर ईमान और अल्लाह पर भरोसा है तो बड़ी से बड़ी जंगी मशीनरियों को नाकाम बनाकर हर दौर के यज़ीद के लिए मुँह काला करने के अस्बाब फ़राहम कर सकते हैं क्योंकि यज़ीद और हुरमला के बाद अब उनमें से किसी का नाम भी नहीं बचा है बल्कि ये ज़ुल्म और बरबरियत की पहचान बन चुके हैं। करबला के बाद भी दूसरे इमामों के दौर में यज़ीद और हुरमला पैदा होते रहे और ये सिलसिला आज भी जारी है मगर ये भी एक हक़ीक़त है कि इस तरह के यज़ीदों और हुरमलाओं से मुक़ाबला करने के लिए हर दौर में हुसैनियत के मानने*

■ अली अब्बास रिज़वी

*वाले भी मौजूद रहे हैं। आजके ज़माने में यज़ीद और हुरमला अपने-अपने अंदाज़ में मौजूद हैं जो मासूम और बेगुनाहों का ख़ून पूरी बेदर्दी के साथ बहा रहे हैं। आज ईराक़, अफ़ग़ानिस्तान वग़ैरा में मासूम बच्चों, औरतों और बेगुनाह शहरियों का ख़ून बहाने वाले कोई और नहीं बल्कि वक़्त के यज़ीदी और हुरमला जैसे जल्लाद हैं।*

*जबकि दूसरी तरफ़ ईमानी जज़्बे से भरे हुए निहत्ते और बेसहारा लोग जिनमें फ़िलिस्तीनी, ईराक़ी और अफ़ग़ानी सभी शामिल हैं, आज के यज़ीदियों और यज़ीदी फ़ौज का डट कर मुक़ाबला कर रहे हैं क्योंकि उनके सामने करबला मौजूद है और कर्बला तो वह न मिटने वाला कारनामा है जो हर दौर के ज़ुल्म के बानियों के लिए एक बड़ा चैलेन्ज है। बक़ौल 'जोश' मलिहाबादी-*

*करबला एक जंग है सुलतानों से*

*इसमें भी कोई शक नहीं है कि करबला का सबसे बड़ा पैग़ाम ये है कि अल्लाह की राह में उस पर भरोसा करके ज़ुल्म की बुनियादों को ढाया जा सकता है।* ●

# कूफ़ियों का धोखा

■ नजमा नक़वी

यज़ीद का ज़माना है और इमाम हुसैन[अ॰] मदीने में हैं। यज़ीद की तरफ़ से मदीने के हाकिम वलीद बिन अतबा के पास हुक्म आता है कि हुसैन[अ॰] से बैअत ले लो और वह इन्कार करें तो उन्हें क़त्ल कर दो। इमाम हुसैन[अ॰] वलीद के दरबार में पहुंचे और बैअत के मुतालबे के जवाब में इमाम[अ॰] ने कहा कि हम अहलेबैत हैं और यज़ीद बेहया और बेग़ैरत है। क्या मेरा जैसा उसके जैसे की बैअत कर सकता है। कभी नहीं! तुम इस मसले पर रात भर ग़ौर कर लो। इसके बाद सबकी मौजूदगी में मेरे सामने बैअत का सवाल करना, वहीं मैं अपने फ़ैसले का एलान करूँगा। लेकिन मरवान बिन हकम की दख़लअंदाज़ी और क़त्ल की धमकी के जवाब में यह कह कर कि 'ऐ इब्ने ज़रक़ा! क्या तू मुझे क़त्ल की धमकी दे रहा है?' अपने साथियों और अज़ीज़ों के साथ वलीद के दरबार से वापस आ गए। रात नाना के मज़ार और माँ की क़ब्र पर गुज़ारी। सुबह को दरवाज़े पर मरवान से फिर सामना हो गया। मरवान ने कहा कि अभी भी मौक़ा है, यज़ीद की बैअत कर लीजिए! दीन व दुनिया बन जाएगी। इमाम ने जवाब में इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहने के बाद फ़रमाया, "क्या वह इस्लाम भी इस्लाम है जिसका सरदार यज़ीद जैसा फ़ासिक़ व फ़ाजिर हो? मैंने अपने नाना मुहम्मद मुस्तफ़ा[स॰] से सुना है कि ख़िलाफ़त ख़ुदा की तरफ़ से दी जाने वाली चीज़ है और अबु सुफ़यान की औलाद पर ख़िलाफ़त हराम है।"

यह सुनकर मरवान पैर पटख़ता हुआ वहाँ से चला गया। इमाम[अ॰] घर में आए। बहन पर नज़र पड़ी तो फ़रमाया कि ज़ैनब[स॰]! यज़ीद की तरफ़ से बैअत का मुतालबा किया गया है, तुम क्या कहती हो? जनाबे ज़ैनब ने कहा, "भाई! आप मेरे माँ-बाप की निशानी हैं और मुझे सबसे ज़्यादा प्यारे हैं मगर ऐसे फ़ासिक़ और फ़ाजिर की बैअत से तो मर जाना बेहतर है।" इमाम[अ॰] ने बहन को सफ़र की तैयारी का हुक्म दिया। जनाबे मुहम्मदे हनफ़िया को अपना वसिय्यतनामा लिख कर दिया और बनी हाशिम के नाम एक और वसिय्यतनामा लिखकर अब्दुल्लाह बिन जाफ़र को देकर कहा कि आप बीमारी की वजह से सफ़र नहीं कर सकते हैं लेकिन बनी हाशिम में जो भी मेरे साथ सफ़र करेगा उसको शहादत जैसा बड़ा मर्तबा नसीब होगा। इसके बाद अहलेबैत को लेकर घर से इस तरह निकल पड़े जैसे भरे घर से जनाज़ा निकलता है। रसूल[स॰] के रौज़े से रूख़सत होकर मक्के पहुंचे और दिरहमो दीनार की लालच में डूबे हुए मुसलमानों के सोए हुए दिलो दिमाग़ को बेदार करने का बेड़ा उठा लिया। हालात कुछ ऐसे हुए कि शामी हुकूमत ने ग़ैर इन्सानी रिएक्शन दिखाते हुए एहराम बांध कर रसूल[स॰] के नवासे के क़त्ल की साज़िश रच दी। नतीजे में इमाम हुसैन[अ॰] ने मक्का को छोड़ दिया क्योंकि ख़ुदा के घर में ख़ून की बारिश इमाम[अ॰] को गवारा नहीं थी। ईराक़ वालों ख़ास कर कूफ़ियों की तरफ़ से सैकड़ों ख़त इमाम के पास आ चुके थे इसलिए आपने कूफ़े का रुख़ किया और जिस वक़्त तक आपको अपने सफ़ीर जनाबे मुस्लिम बिन अक़ील की शहादत की ख़बर नहीं मिल गई आप कूफ़े की तरफ़ ही बढ़ते रहे। शहादत की ख़बर मिलने के बाद आपने कूफ़े जाने का इरादा बदल दिया और करबला की तरफ़ बढ़ने लगे। कूफ़ियों के बारे में किताबों में मिलता है कि सालों साल से वह शामी हुकूमत

# सूरए फ़ातिहा

मरहूमा

**रुक़ईया बानो**

बिन्ते सै. रियाज़ अली

और

मरहूम

**सै. सिराजुल हसन**

इब्ने सै. फ़िदा हुसैन

के लिए

सूरए फ़ातिहा

की गुज़ारिश है।

Book Zone
A House of Educational Books
BHOPAL

सै. हबीबुल हसन रिज़वी
सै. हसीबुल हसन रिज़वी

के जुल्मो सितम का निशाना बने हुए थे मगर उनमें अमीरे शाम की मुख़ालेफ़त की हिम्मत नहीं थी। अमीरे शाम की मौत और यज़ीद के हुकूमत में आने की ख़बर सुनते ही उन्होंने रसूल के नवासे के पास अपनी हिमायत व वफ़ादारी के ख़त भेजने शुरु कर दिए। यहाँ तक कि डेलिगेशन की सूरत में भी उन्होंने इमाम से मुलाक़ात की और अपनी वफ़ादारी का यक़ीन दिलाया।

इमाम हुसैन[अ०] ने शुरूआती तौर पर अपने चचाज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को अपनी तरफ़ से बैअत लेने के इख़्तियार के साथ कूफ़े रवाना किया और देखते ही देखते अट्ठारह हज़ार कूफ़ियों ने जनाबे मुस्लिम के हाथों पर इमाम हुसैन[अ०] की इमामत व ख़िलाफ़त क़ुबूल करते हुए बैअत कर ली। यह सब देखकर हुसैनी सफ़ीर ने कूफ़ियों की बैअत की ख़बर इमाम हुसैन[अ०] के पास भेज दी। मगर इसी बीच यज़ीद ने उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को कूफ़े का गर्वनर बना दिया और इब्ने ज़ियाद ने धोखे और फ़रेब से काम लेकर पूरे शहर में ख़ौफ़ व डर का ऐसा माहौल बना दिया कि बैअत करने वाले सारे कूफ़ियों ने मुस्लिम बिन अक़ील को कूफ़े में अकेला छोड़ दिया। कुछ ने इब्ने ज़ियाद के साथ साज़बाज़ कर ली और कुछ ने पूरी तरह चुप्पी साध ली। कुछ लोगों ने हिम्मत दिखाई भी तो वह गिरफ़्तार या क़त्ल कर दिये गए। जनाबे मुस्लिम बिन अक़ील ने जिहाद किया तो उनको भी शहीद करके इब्ने ज़ियाद ने उनकी बेसर लाश पूरे शहर में खिंचवाकर लोगों के दिलों में और ज़्यादा डर बिठा दिया। इमाम हुसैन[अ०] ने जब रास्ते में अपने वफ़ादार सफ़ीर की शहादत और लाश की बेहुरमती की ख़बर सुनी तो आपने कूफ़ियों की बेवफ़ाई पर नफ़रीन करते हुए अपने क़ाफ़ले का रुख़ करबला की तरफ़ मोड़ दिया और एक बार फिर अपने साथियों से कहा कि शहादत हमारा पीछा कर रही है, जिसको जान प्यारी हो वह हम से अलग हो जाए। मैं अपनी बैअत उस से उठाता हूँ।

जिनको आपका साथ प्यारा था उन्हें लेकर आगे बढ़े। इसके बाद हुर बिन यज़ीद रियाही के एक हज़ार के लश्कर ने आपके क़ाफ़िले को घेर लिया। इमाम ने मक्के वापस होने या कूफ़े की तरफ़ जाने से इन्कार किया और हुर के साथ करबला पहुंच गए।

यह वह मौक़ा है जिसके बारे में इस्लामी उलमा और स्कालर्स ने कूफ़े की तरफ़ इमाम[अ०] के जाने के बारे में अलग-अलग नज़रिए पेश किए हैं। कुछ का मानना है कि इमाम[अ०] को शुरु से ही मालूम था कि कूफ़ियों से वफ़ा की कोई उम्मीद नहीं है, मक्के में रहें या कूफ़े जाएं, ख़ून बहरहाल बहेगा मगर इस फ़र्क़ के साथ कि मक्के में क़त्ल या गिरफ़्तार हुए तो इस से असली मक़सद पूरा नहीं होगा और अगर इराक़ में शहीद हुए तो इससे ज़्यादा अच्छे नतीजे मिल सकेंगे। एक नज़रिया यह भी है कि इमाम ने कूफ़ियों की दावत को भरोसेमंद समझकर सफ़र किया था कि उनकी मदद से इस्लामी हुकूमत क़ायम करने में कामयाब हो जाएंगे मगर हालात ने रुख़ बदला और इमाम शहीद कर दिए गए और कूफ़े की मुहिम कामयाब नहीं हो सकी लेकिन शहीद मुतह्हरी ने कूफ़ियों की दावत को हुसैनी मिशन का सबसे कमज़ोर फ़ैक्टर बताते हुए लिखा है, "शुरु से ही इमाम[अ०] का असल मक़सद अम्र बिल मारूफ़ और नहीं अनिल मुनकर और उम्मत की इस्लाह था।" शहीद मुतह्हरी आगे लिखते है, "वरना इमाम को मुस्लिम के साथ कूफ़ियों की बेवफ़ाई की ख़बर सुनते ही पीछे हट जाना चाहिए था मगर इसके बाद आपकी तक़रीरों में पहले से ज़्यादा जोशो ख़रोश पाया जाता है।"

बहरहाल कूफ़े में इब्ने ज़ियाद के आने के बाद जिस वक़्त उस ने जामा मस्जिद में यज़ीद को अमीरुलमोमिनीन कहते हुए इमाम हुसैन[अ०] को ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन का दुश्मन कहकर यज़ीद की तरफ़ से कूफ़े वालों के माहाना वज़ीफ़े में सौ गुना इज़ाफ़े का एलान किया और ख़ज़ाने का मुँह खोल दिया और बैतुलमाल पानी की तरह बहने लगा तो कूफ़े के कुछ दीनदार मुजाहिदों के सिवा सब माल व दौलत की लालच में बह गए और एक लाख का लश्कर रसूल के नवासे से जंग के लिए कूफ़े में तैयार हो गया। शायद इसी वजह से कूफ़ियों के साथ बेवफ़ाई की लफ़्ज़ इस्तेमाल होने लगी है वरना हज़रत अली[अ०], इमाम हसन[अ०] और इमाम हुसैन[अ०] की मदद करने वाले ऐसे इस्लामी दिलेरों की भी कमी नहीं थी जो कूफ़े ही के थे और जिन्होंने अपना ख़ून इस्लाम व क़ुरआन की रगों में दौड़ाया और मुसलमानों को ज़िन्दा व बेदार किया था।

# कॉफ़ी कैंसर से बचाती है

■ मो. यूसुफ़ मिड़की

एक ज़माने से यह बहेस मेडिकल साइंस के एक्सपर्टस के बीच चली आ रही है कि कॉफ़ी पीने के क्या फ़ायदे हैं। कुछ एक्सपर्टस यह बताते रहे हैं कि कॉफ़ी सेहत के लिए बहुत अच्छी है और यहां तक कि यह कैंसर जैसे मर्ज़ को भी रोकती है। जबकि कुछ लोगों का यह मानना है कि कॉफ़ी में मौजूद कैफ़ीन एक ज़हरीला कम्पाउंड है और कॉफ़ी का ज़्यादा इस्तेमाल जिस्म में ज़हरीले असर छोड़ता है। इन दो अलग-अलग नज़रियों के बीच हाल ही में की गई एक रिसर्च ने यह पूरी तरह से साफ़ कर दिया है कि कॉफ़ी वाक़ई कैंसर जैसे ख़तरनाक मर्ज़ से बचाती है। ख़ास तौर पर इसके बाक़ाएदा इस्तेमाल से सर और गर्दन का कैंसर होने के ख़तरे बहुत कम हो जाते हैं। सर और गर्दन के कैंसर बड़े ही ख़तरनाक होते हैं और इन पर कैंसर की दवाएं सही तौर पर असर नहीं करतीं।

इस रिसर्च टीम की एक अहम मिम्बर हैं मियाहा शीबे, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर ऑफ़ डिपार्टमेंट ऑफ़ फ़ैमिली एण्ड प्रीवेंटिव मेडिसिन, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ऊथा, साल्ट लेक सिटी और इस रिसर्च के नतीजों को कैंसर एपीडिमियालॉजी बायोमारकर्स एण्ड प्रीवेंशन मैगज़ीन में छापा गया है जिसे अमेरिकी एसोसिएशन फ़ॉर कैंसर रिसर्च पब्लिश करता है। यह एक बहुत बड़े पैमाने पर की गई रिसर्च है जिसमें कई बड़ी स्टडीज़ को इकट्ठा करके नतीजों को निकाला गया है। इसमें साफ़ हुआ है कि रोज़ाना बाक़ाएदगी से कॉफ़ी पीने वाले यानी रोज़ाना लगभग चार या इससे ज़्यादा कप कॉफ़ी पीने वाले लोगों को कॉफ़ी न पीने वालों के मुक़ाबले में कैंसर के ख़तरे लगभग 39% कम हो जाते हैं। इन में मुंह और हलक़ के कैंसर भी शामिल हैं। इस रिसर्च में इसका भी टेस्ट किया गया कि चाय में जो कैफ़ीन मौजूद होता है, क्या उसके इस्तेमाल से भी इस तरह के कैंसरों की रोकथाम होती है मगर रिसर्च से इस बात का सुबूत नहीं मिल सका है। इसलिए यह बात साफ़ हो जाती है कि सिर्फ़ कॉफ़ी में मौजूद कैफ़िन की वजह से ही सर और गर्दन के कैंसरों से बड़ी हद तक रोकथाम मिलती है।

डाक्टर हाशीबे का कहना है कि सर और गर्दन वाले हिस्से में होने वाले कैंसरों से दुनिया में एक बहुत बड़ी तादाद में लोग मर जाते हैं। इसलिए इस बारे में कॉफ़ी के रोल पर और ज़्यादा रिसर्च करने की ज़रूरत है और लोगों को इसके फ़ायदों को बताते हुए उन्हें इस क़ुदरती चीज़ की इस अनूठी ख़ूबी से भरपूर फ़ायदा उठाने की तरफ़ ध्यान भी दिलाया जाना चाहिए।

इससे पहले कॉफ़ी पर की गई कई एक स्टडी ने इस पीने वाली चीज़ के कई फ़ायदों को लोगों के सामने ज़ाहिर किया है। जैसे कि हारवर्ड यूनिवर्सिटी की एक स्टडी में पाया गया कि कॉफ़ी का ज़्यादा पीना मर्दों में प्रोस्टेट कैंसर को बड़ी हद तक कम कर देता है। जो लोग चार से पांच कप कॉफ़ी रोज़ाना पीते हैं उन्हें प्रोस्टेट कैंसर होने का जोखिम लगभग 60% तक घट जाता है। यह कोई ऐसी सच्चाई नहीं है जिससे मुंह फेरा जा सके। इस रिसर्च से भरपूर फ़ायदा उठाना चाहिए। इस रिसर्च की डिटेल्स पिछले दिसम्बर में होने वाली फ़्रंटियर्स इन कैंसर प्रिवेंशन कांफ़्रेंस में दी गई थीं। इसी तरह एक और रिसर्च की डिटेल्स कैंसर एपीडीमियॉलोजी बायोमारकर्स एण्ड प्रिवेंशन के जनवरी के पिछले इशू में छापी गई हैं। उसमें बताया गया है कि कॉफ़ी पीने से दिमाग़ के ट्यूमर (कैंसर) जिनको Gliomas कहा जाता है, के होने के ख़तरे बड़ी हद तक कम हो जाते हैं। यह रिसर्च इम्पीरियल कालेज लंदन के साइंटिस्ट्स ने की थी। इसमें उन्होंने बताया कि दिमाग़ के ट्यूमर के ख़तरे उन लोगों में बड़ी हद तक कम होते हैं जो रोज़ाना पांच या उससे ज़्यादा कप कॉफ़ी या चाय पीते हैं। इस रिसर्च में कॉफ़ी के साथ चाय के फ़ायदे भी सामने आए थे। ●

# बच्चों की पर्सनाल्टी का एहतेराम और उनकी हौसला अफ़ज़ाई

परवरिश

■ डा. अम्बरीन कौसर

हदीस में है, "अपने बच्चों का एहतेराम और उनकी अच्छी परवरिश करो ताकि तुम्हारी मग़फ़िरत की जाए।"

इंसान की एक नेचुरल ख़्वाहिश जो बचपन ही में सामने आ जाती है और आख़िरी उम्र तक बाक़ी रहती है वह है दूसरों की तरफ़ से अपनी तारीफ़ की उम्मीद रखना। ये ख़्वाहिश इंसान में पाई जाने वाली ख़ास ख़्वाहिशों में से एक है।

तारीफ़ करना और शौक़ दिलाना परवरिश का बहुत ही असरदार उसूल है जिस से माँ-बाप और टीचर्स भरपूर फ़ायदा उठा सकते हैं। बड़ों को चाहिए कि जब किसी बच्चे को अच्छा काम करते हुए देखें तो उसकी तारीफ़ करें, उसे शौक़ दिलाएं और इस बात का इज़हार करें कि आप उसके इस काम से ख़ुश हैं। बच्चा आपके शौक़ दिलाने पर अपने काम को और जोशो ख़रोश से करेगा और संजीदगी के साथ अपने काम को पूरा करेगा।

रसूले ख़ुदा[स०] फ़रमाते हैं, "जब कोई बाप अपने बच्चे को प्यार से इस तरह देखे कि बच्चा ख़ुश हो जाए तो ख़ुदा उसे एक ग़ुलाम आज़ाद करने का बदला देता है।"

जी हाँ! बच्चा अपने नेचर के मुताबिक़ आगे बढ़ने के लिए अलग-अलग काम करता है और अपनी बचकाना ताक़त को बढ़ाता है। माँ-बाप और दूसरे लोगों की तरफ़ से की जाने वाली तारीफ़ और शौक़ दिलाने से बच्चे के लिए तरक़्क़ी के रास्ते खुलते हैं और उसकी सलाहियतें उभर कर सामने आती हैं। आईए इस बारे में तारीख़ से कुछ मिसालें पेश करते हैं।

### मिसालें

यअला बिन मर्रा कहते हैं, "मैं रसूले ख़ुदा[स०] के घर में मेहमान था। मैंने हसन इब्ने अली[अ०] (जो उस वक़्त बच्चे थे) को देखा कि गली में खेल रहे हैं और रसूले ख़ुदा उनके पीछे भाग रहे हैं। फिर आख़िरकार रसूले ख़ुदा[स०] ने उन्हें पकड़ ही लिया और गोद में लेकर ख़ूब प्यार किया और फ़रमाया कि हसन मुझ से है और मैं हसन से हूँ, जो हसन से मुहब्बत करेगा अल्लाह उस से मुहब्बत करेगा।"

### आँखों को चूम लिया

एक दिन हज़रत अली[अ०] ने हज़रत अब्बास[अ०] को अपने ज़ानू पर बिठाया। उस वक़्त हज़रत अब्बास बहुत छोटे थे और नई-नई तालीम हासिल करना शुरु की थी। इमाम[अ०] ने फ़रमाया, "कहो एक। हज़रत अब्बास[अ०] ने कहा, "एक"। इमाम ने फिर फ़रमाया, "कहो! दो" लेकिन अब्बास ख़ामोश रहे।

इमाम ने पूछा, "ख़ामोश क्यों हो गए बेटा? जवाब क्यों नहीं देते?"

अब्बास ने फ़रमाया, "बाबा मुझे शर्म आ रही है कि जिस ज़बान से मैंने ख़ुदा को एक कहा है अब किस तरह से दो कहूँ।"

ये समझदारी भरा जवाब सुनकर इमाम ने हज़रत अब्बास की तारीफ़ और शौक़ के लिए उनकी आँखों को चूम लिया।

### हज़रत फ़ातिमा[अ०]

रसूले ख़ुदा[स०] अपनी बेटी फ़ातिमा ज़हरा[स०] का बहुत ज़्यादा एहतेराम करते थे। आप अपनी बेटी के एहतेराम में अपनी जगह से उठ खड़े होते थे, उनके हाथ चूमते और अपनी जगह पर बिठाते और अक्सर उन्हें सारी दुनिया की औरतों की सरदार का नाम देते और कभी 'फ़िदाहा अबूहा' (फ़ातिमा का बाबा फ़ातिमा पर क़ुर्बान) कह कर अपनी गहरी मुहब्बत का इज़हार करते। आपने उन्हें 'उम्मे अबीहा' (अपने बाबा की माँ) भी कहते थे।

### छोटे बच्चों की तारीफ़ और उनको शौक़ दिलाना

एक रात रसूले अकरम[स०] अपनी बेटी फ़ातिमा ज़हरा[स०] के घर गए। इमाम हसन और इमाम हुसैन[अ०] भी वहीं मौजूद थे। रसूले अकरम[स०] ने

दोनों को देखा और फ़रमाया कि उठो और दोनों कुश्ती लड़ो। दोनों बच्चे कुश्ती में लग गए। बीबी फ़ातिमा ज़हरा[स] किसी काम से कमरे से बाहर गईं जब वापस आईं तो सुना कि रसूले अकरम[स] इमाम हसन[अ] से कह रहे थे कि हुसैन को पकड़कर नीचे गिरा दो। ये सुनकर बीबी ने कहा, "बाबा! अजीब बात है कि आप बड़े से कह रहे हैं कि वह छोटे को नीचे गिरा दे?"

हुज़ूर[स] ने फ़रमाया, "बेटी मैं देख रहा हूँ कि जिब्रईल हुसैन की हिम्मत बढ़ा रहे हैं कि हसन को गिरा दो। इसलिए मैं हसन की तरफ़दारी कर रहा हूँ।"

### बच्चे के दिल में नफ़रत और बुराई पैदा न होने दीजिए

एक रोज़ एक बच्चे ने रसूलुल्लाह[स] के कपड़े ख़राब कर दिए। जब उसकी दाई को मालूम हुआ तो उसने तेज़ी से आगे बढ़कर बच्चे को अपनी तरफ़ खींच लिया जिसकी वजह से वह रोने लगा। हुज़ूर[स] ने ये देखकर फ़रमाया, "ऐ उम्मुल फ़ज़ल! ज़रा आराम से! मेरे कपड़े तो पानी से साफ़ हो जाएंगे लेकिन इस बच्चे के दिल में बुराई की जो गर्द बैठ जाएगी वह किस तरह साफ़ होगी?"

### बच्चे का एहतेराम!

बुज़ुर्ग आलिमे दीन शैख़ तेहरानी मरहूम कहते हैं, "मैं गवाह हूँ कि अज़ीम मरजए तक़लीद मिर्ज़ा शीराज़ी किस तरह अपने 8 या 9 साल के बच्चे के साथ अदब और एहतेराम से पेश आते थे। एक रोज़ मैं उनके पास बैठा था कि मुलाज़िम ने कहा कि आपका बेटा आपके पास आना चाहता है। इजाज़त मिलने के बाद कमसिन बच्चा अंदर दाख़िल हुआ और सलाम करके वहीं खड़ा रहा। आक़ाए शीराज़ी से बैठने की इजाज़त मिलने के बाद बच्चा बैठ गया लेकिन अपनी निगाहें ज़मीन पर रखीं। उन्होंने बच्चे से स्कूल, सबक़ और दूसरे हालात पूछे। मैंने देखा कि आक़ाए शीराज़ी बातचीत के दौरान बच्चे को 'आक़ा' (यानी जनाब) कहकर बात कर रहे हैं।

### आलिमे दीन और बच्चे की ख़ुशहाली

मरहूम हज़रत आयतुल्लाहुल उज़मा सै. मुहम्मद तक़ी ख़्वानसारी बहुत बड़े आलिम और मुजतहिद थे। एक बार रात के वक़्त कहीं जा रहे थे कि रास्ते में देखा एक बच्चा रो रहा है। उस से पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो?

उसने जवाब दिया कि मेरे पैसे खो गए हैं।

आयतुल्लाह ख़्वानसारी ने अपनी टार्च से इधर-उधर ज़मीन पर रौशनी डाली और पैसे ढूँढ कर बच्चे को दे दिए। जिसके बाद बच्चा अपने घर की तरफ़ चला गया।

वह अगरचे बहुत बड़े आलिम और मुजतहिद थे लेकिन उन्हें बच्चे का काम करने में कोई शर्म महसूस नहीं हुई बल्कि बहुत ख़ुशी और इन्केसारी के साथ उसका काम करके उसका दिल ख़ुश कर दिया।

### बच्चों की तरक़्क़ी और कामयाबी पर शौक़ दिलाना

इमाम ख़ुमैनी[रह] के पोते कहते हैं, "इमाम ख़ुमैनी[रह] जब ख़ाली होते थे तो कभी-कभी सब बच्चों को अपने कमरे में जमा करते और उनके साथ खेलने लगते थे। कभी बच्चों से खेल के बीच ही में उनके इम्तिहानों वग़ैरा के बारे में सवाल भी कर लेते थे। अगर कोई बच्चा इम्तिहान में अच्छे नम्बर लाता था तो उसे शाबाशी देते और अक्सर कोई छोटा सा तोहफ़ा जैसे इत्र वग़ैरा दे दिया करते थे।"

एक बार इमाम ख़ुमैनी[रह] के पोते ने इमाम ख़ुमैनी को ग्यारह बार सलाम किया। वजह पूछी तो कहा कि मैं देखना चाहता था कि वह हर बार मेरे सलाम का जवाब देते हैं या नहीं। मज़े की बात ये है कि हर बार वह जवाब देते और कहते थे कि वअलैइकुमुस्सलाम आक़ा यासिर, मेरा फूल सा प्यारा बेटा।

### शाबाशी

हुज्जतुल इस्लाम फ़लसफ़ी मरहूम कहते हैं, "जब मुझे मजलिस पढ़ने का शौक हुआ तो मैं पहली मजलिस की तैयारी के लिए शैख़ अली अकबर के पास गया और उनसे दरख़्वास्त की कि मुझे एक मजलिस लिख दें, मैं मिंबर पर पढ़ना चाहता हूँ। उस वक़्त मेरी उम्र पन्द्रह-सोला साल थी। मजलिस लिखवाकर मैं घर आ गया। ख़ूब अच्छी तरह तैयारी की फिर जिस मस्जिद में मेरे वालिद नमाज़ पढ़ाते थे, वालिद की इजाज़त से एक रात वहीं मजलिस पढ़ने का इरादा किया। जैसे ही वालिद ने इशा की आख़िरी रकअत पढ़ी मैं फ़ौरन मिंबर पर बैठ गया। सब हैरत से मुझे तकने लगे।

मुझे अच्छी तरह याद है कि मजलिस के शुरु में कुछ शेर भी मैंने मिंबर पर बैठते ही पढ़े थे। जैसे ही शेर ख़त्म हुए शैख़ मुहम्मद समरानी ने ज़ोर-ज़ोर से वाह-वाह! सुब्हानल्लाह! शाबाश! कहना शुरु किया। उनकी वह शाबाश आज तक मेरे कानों में गूँजती है और मेरे काम आ रही है। ख़ुलासा ये कि मैंने मजलिस ख़त्म की और सब ने बहुत पसंद की। कुछ लोगों ने तो वहीं वालिद साहब से कहा कि आप इजाज़त दें कि फ़ुला तारीख़ को ये हमारे घर भी मजलिस पढ़े। वालिद साहब ने भी इजाज़त दे दी। जब मैं घर आया तो वालिद साहब ने कहा कि अगरचे आज तुम पहली बार मिंबर पर बैठे थे लेकिन इसके बावजूद बिना किसी डर के बहुत अच्छी मजलिस पढ़ी। मैंने भी फ़ौरन जवाब दिया कि मेरे ख़याल में मेरी ये पहली मजलिस सिर्फ़ शैख़ मुहम्मद समरानी की शाबाश की वजह से कामयाब हुई है। बहरहाल उनकी इस शाबाशी ने मुझ पर बहुत अच्छे असर डाले हैं। ●

# DARKNESS to LIGHT

# अंधेरों से उजालों की तरफ़

हकीम मुहम्मद सईद

एक दौर था जब हमारी तहज़ीब, हमारे कल्चर और वैल्यूज़ का नक़्शा यह था कि सारे दिन काम करके शाम ख़ाली रहती थी। एक सुकून ज़िंदगी की शाम को मिला हुआ था। सोचने-समझने के लिए ज़ेहन आज़ाद रहता था। फ़ुरसत की शाम और सुकून की रात बसर करने की राहें तलाश की जाती थीं। अख़्लाक़ का बोल-बाला था। दूसरे के एहतेराम और मुहब्बत की सरशारियां हर तरफ़ फैली हुई थीं।

क़िनाअत का दौर दौरा था। माल व दौलत पर हवस भरी नज़र का कोई तसव्वुर नहीं था, शेर व अदब ज़ेहनी परवरिश का ज़रिया थे और इल्म व हिकमत ज़ेहनी ख़ुशी का। हाय! यह दिन लद गए। उन हसीन व जमील दिनों और राहतों की जगह जो दिन आए वह आज के दिन हैं। इंसान डर के साए में ज़िंदगी की सांस ले रहा है। इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त में उसके रात-दिन बसर हो रहे हैं। ग़ारत गरी का बाज़ार गर्म है और इंसान बदअमनी से परेशान हाल है।

इन हालात में हमारे एक पुराने दोस्त एक शबे फ़ुरसत मनाने पर ज़ोर दे रहे थे यानी एक ऐसी रात जिसमें कुछ दोस्त फ़ुरसत से मिल बैठें और अपनी-अपनी सुनाएं। महीने और साल के गुज़रने से दिमाग़ में ऐसी बहुत सी बातों का हुजूम हो जाता है जो बाहर निकलना चाहती हैं। बचपन के बहुत से वाक़ेआत जो उस वक़्त और बहुत वक़्त बाद भी बेमायने नज़र आते हैं, बामायनी और अहम हो जाते हैं। उनमें हिकमत व इल्म की महक और चाशनी पैदा हो जाती है। आख़िर एक भीगी शाम ने इस रात का पैग़ाम दिया और दिल व दिमाग़ ने भी हथियार डालते हुए कहा, 'बहुत दौड़ चुके, कुछ घंटे हर फ़िक्र से आज़ाद होकर भी गुज़ार लो। एक रात एक दूसरे की दास्तान सुनो इससे फ़ायदा ही होगा।''

अगले दिन के बिज़ी शैड्यूल और फ़िक्रों से आज़ाद होकर हम दो चार दोस्त अगली रात में मिल बैठे और इधर-उधर की बातें होने लगीं। बीते लमहों की यादें दोहराई जाने लगीं, तर्जुबों का इज़हार होने लगा। जवानी के तज़किरों से गुज़र कर बात लड़कपन की होने लगी, लड़कपन और बचपन के डर बयान किए जाने लगे। एक दोस्त ने यादों की राख कुरेदते हुए कहा, ''मेरी उम्र उस वक़्त 9-10 साल की होगी। मैं मां-बाप के साथ कार में एक लंबे सफ़र पर रवाना हुआ। गाड़ी पापा चला रहे थे और मैं उनकी और अपनी मम्मी के बीच बैठा हुआ था। रास्ते में एक पहाड़ी सिलसिला आया। कार लगातार चढ़ाई चढ़ती रही। एक मोड़ पर सड़क एक काली अंधेरी सुरंग में दाख़िल होती नज़र आई। उस अंधेरी सुरंग को देखकर मैं घबरा गया और बोला, ''मुझे डर लग रहा है।'' इतने में हमारी कार सुरंग में दाख़िल हो गई और उसी वक़्त पापा ने गाड़ी की बत्तियां जला दीं।

हम अभी थोड़ी दूर ही गए थे कि इंजन ने एक हिचकी ली और बंद हो गया। इस घुप अंधेरे में गाड़ी के बंद होने से बड़ा डर लगा, क़रीब था कि मैं चीख़ने लगूं, इतने में मेरे पापा ने मुझे थपकते हुए कहा, ''घबराओ नहीं हम अभी इस सुरंग से बाहर आ जाएंगे।'' उस ज़माने में कारों के फ़्यूल गर्म होकर बंद हो जाते थे, कार की सिर्फ़ छोटी बत्तियां जली हुई थीं और सुरंग में एक भयानक सन्नाटा छाया हुआ था। मैं आंखें फाड़-फाड़ कर रोशनी की एक-एक किरन की तलाश कर रहा था कि इतने में बहुत दूर एक रोशन धब्बा नज़र आया और मेरी जान में जान आई। अपनी मम्मी का हाथ थामते हुए बोला, ''वह रोशनी कैसी है?'' मम्मी ने हंसते हुए कहा, ''हां! वह रोशनी ही तो सुरंग का दूसरा सिरा है, इस अंधेरे से गुज़र कर

हम फिर रोशनी में पहुंच जाएंगे। अगर यहीं खड़े रहे तो अंधेरे ही में रहेंगे। इंजन के स्टार्ट होते ही हम इस अंधेरे से उजाले में पहुंच जाएंगे।''

मेरे पापा ने कहा, ''बेटे! रोशनी के इस धब्बे को देखते रहो। हमारी गाड़ी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ेगी, उजाले का वह प्वाइंट फैलता और बढ़ता चला जाएगा।'' और फिर वही हुआ। कार स्टार्ट होकर आगे बढ़ी तो हम सुरंग से गुज़र कर रोशनी में आ गए। हम ऐसी कई सुरंगों में से गुज़रे। अंधेरे और उजाले एक दूसरे को अपने में समोते रहे। उनमें से एक सुरंग बहुत लंबी थी। बल खाती इस सुरंग के सिरे पर रोशन प्वाइंट भी नज़र नहीं आ रहा था। सुरंग में हमारी कार की बत्तियों की रोशनी रास्ता दिखा रही थी। रोशनी की एक चादर उसकी अंधेरी छत को भी रोशन कर रही थी। इंजन का शोर बहुत तेज़ हो गया था। जी एक बार फिर घबराया, लेकिन मोड़ काटते ही वही रोशनी का धब्बा नज़र आया और हम एक बार फिर रोशनी में आ गए। वापसी के सफ़र में हम एक बार फिर इन सुरंगों से गुज़रे।

यह सफ़र उस वक़्त तो महेज़ एक अनोखा तर्जुबा लगा। लेकिन दरअस्ल मैंने उस दिन बड़ा अहम सबक़ सीखा, सबसे पहले तो यह बात मालूम हुई कि सफ़र खुले मैदानों ही में नहीं होता बल्कि मंज़िल तक जाने वाले रास्ते दुश्वार गुज़ार इलाक़ों और अंधेरी सुरंगों में से भी गुज़रते हैं। ज़िंदगी का क़ाफ़िला आगे बढ़ा तो पता चला कि ज़िंदगी के रास्ते में भी मायूसियों और नाकामियों की अंधेरी सुरंगें आती हैं। कुछ वक़्त उनके सिरे रोशन होते हैं और कुछ वक़्त रोशनी का मामूली सा धब्बा भी नज़र नहीं आता, लेकिन हिम्मत और ताक़त के साथ बढ़ते रहने पर अंधेरा सिमटता और उजाले फैलते नज़र आते हैं। रास्ते के इन अंधेरों से घबराने वाले रोशन मंज़िल तक नहीं पहुंचते कि अंधेरे उन्हें पछाड़ देते हैं। अंधेरों से मुंह फेरने के बजाए उनका डट कर मुक़ाबला करना ही उन्हें पछाड़ देता है, बेशक अंधेरे डरावने होते हैं, बेशक उनमें दम घुटता है लेकिन हिम्मत और इरादा उन्हें बहुत जल्द भगा देता है और रोशनियों का राज हो जाता है।

ज़िंदगी आगे बढ़ी और जब भी कोई मुश्किल वक़्त आया तो मेरे पापा ने यही बात याद दिलाई। अपने सफ़र को याद करो, याद रहे हम उन अंधेरों से किस तरह गुज़रे थे। सुरंगें ज़िंदगी में आती ही हैं, यह भागने की नहीं बल्कि उनमें से गुज़रने की दावत देती हैं।

इस तर्जुबे से मैंने यह सीखा कि ग़ार और सुरंग दो अलग-अलग चीज़ें हैं। ग़ार आगे से बंद होता है। जो लोग उसके बंद रास्ते को खोलते हैं वह बहुत बुलंद हौसला लोग होते हैं और उसी के सहारे उसे सुरंग बना कर रोशनी तक पहुंच जाते हैं। ग़ार की रुकावट दरअस्ल दावत देती है कि आगे बढ़ो और बीच में आने वाले अंधेरों को चीरते हुए उजालों तक पहुंच जाओ, ज़रूरत सिर्फ़ आगे बढ़ते रहने की है। कोशिश जारी रखने की है। आख़िरकार अंधेरे के एक सिरे पर रोशनी टिमटिमाती नज़र आने लगती है जो धीरे-धीरे बढ़ती और फैलती चली जाती है।

अंधेरे उजाले का यह खेल ज़िंदगी भर जारी रहता है। जो लोग अंधेरों से निडर हो जाते हैं, वह हमेशा उन्हें चीर कर रोशनी तक पहुंच जाते हैं। अपनी ज़िंदगी से मायूसियों, डर, परेशानियों और फ़िक्रों के अंधेरों को दूर कीजिए। हौसले, हिम्मत और लगातार कोशिश के चिराग़ जलाइए, उजाले आपके हो जाएंगे।

अपने दोस्तों से मैंने कहा, ''यारो! डर से परेशान होना, हालात से ग़मगीन होना, मुसीबतों के सामने हथियार डाल देना, बुराई की ताक़तों के सामने अच्छाई की ताक़त से ग़ाफ़िल हो जाना, न इंसानियत है और न मर्दानगी। यह फ़िक्रें तुम को ज़िंदगी से मायूसी की सरहदों में दाख़िल कर देंगी। मुश्किल से मुश्किल हालात में भी हौसला और हिम्मत ही हमारी मदद कर सकती है। कोशिशों के दिये रोशन करो और लगातार कोशिशों के चिराग़ जलाओ ताकि उजाले हो जाएं। ज़िंदगी इसी रोशनी का नाम है।''

DARKNESS to LIGHT

# पैरेंटस की ज़िम्मेदारियाँ

*ख़ुदा फ़रमाता है, ''ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।''* (1)

*पैग़म्बरे इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, ''ख़ुदा उन माँ-बाप पर रहमत करे जिन्होंने अपनी औलाद की ऐसी परवरिश की कि वह उनके साथ नेक सुलूक करें।''* (2)

*जब कोई शख़्स ख़ुद नेक हो जाता है तो अल्लाह उसके नेक हो जाने की वजह से उसकी औलाद और उसकी औलाद की औलाद को भी नेक बना देता है।* (3)

*हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''अगर तुम दूसरों को सुधारना चाहते हो तो इसकी शुरूआत ख़ुद को सुधारने से करो और अगर तुम दूसरों को सुधारना चाहो और अपने आपको यूं ही रहने दो तो ये सबसे बड़ा ऐब होगा।''* (4)

*पैग़म्बरे अकरम[स०] फ़रमाते हैं, ''जिस तरह तुम्हारा बाप तुम पर हक़ रखता है उसी तरह तुम्हारी औलाद भी तुम पर हक़ रखती है।''* (5)

*इमाम सज्जाद[अ०] फ़रमाते हैं, ''...तुम्हारी औलाद चाहे बुरी हो या अच्छी, बहरहाल तुम्हीं ने उसे पैदा किया है। समाज में उसे तुम्हारी ही औलाद कहा जाता है। इसलिए यह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि तुम उसे अदब-आदाब सिखाओ, अल्लाह की मग़फ़िरत के लिए उसकी रहनुमाई करो और परवरदिगार की इताअत में उसकी मदद करो। तुम्हारा सुलूक अपनी औलाद के साथ उस शख़्स के जैसा होना चाहिए जिसे यक़ीन होता है कि एहसान के बदले में उसे अच्छी जज़ा मिलेगी और बदसुलूकी की वजह से सज़ा मिलेगी।''* (6)

*पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने फ़रमाया है, ''जिस किसी के यहाँ बेटी हो और वह उसे ख़ूब अदब-अख़लाक़ सिखाए, उसकी तालीम के लिए पूरी कोशिश करे, उसके लिए आराम व आसाइश का भरपूर ख़्याल रखे तो वह बेटी उसे जहन्नम की आग से बचाएगी।''* (7)

*हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''जो शख़्स दूसरों का लीडर बनना चाहे उसे चाहिए कि पहले ख़ुद को सुधारे, फिर दूसरों को सुधारने के लिए आगे बढ़े। दूसरों को ज़बान से अदब सिखाने से पहले अपने आप को अदब सिखाए ... ।''* (8)

1-सूरए तहरीम/6, 2-मकारिमुल अख़लाक़/517, 3-मकारिमुल अख़लाक़/546, 4-गुररुल हिकम/278, 5-मजमउज़्ज़वाएद, 8/146, 6-मकारिमुल अख़लाक़/484, 7-मजमउज़्ज़वाएद, 8/158, 8-नहजुल बलाग़ह

# इमाम सज्जाद अ०

इमाम सज्जाद[अ०] की विलादत 38 हिजरी को मदीने में हुई थी। आपके अलक़ाब, ज़ैनुलआबिदीन, ज़ैनुस्सालेहीन, वारिसे इल्मे नबिय्यीन, अलमुज्तहिद, अज़्ज़की, अलअमीन, अलबुकका वग़ैरा हैं और आपकी कुन्नियत अबुल हसन, अलख़ास, अबू मुहम्मद, अबुल क़ासिम वग़ैरा हैं।

आपने दो साल हज़रत अली[अ०] की इमामत के ज़माने में, दस साल इमाम हसन और दस साल अपने वालिद की इमामत में गुज़ारे थे। उसके बाद 34 साल तक इस्लामी समाज की इमामत और हिदायत की थी। इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] करबला में ख़ुद भी मौजूद थे लेकिन बीमारी और बुख़ार की वजह से आप ने जंग नहीं की थी क्योंकि बीमार पर जिहाद वाजिब नहीं है और आपके वालिद ने आपको जंग की इजाज़त भी नहीं दी थी।

अल्लाह की मसलेहत यही थी कि इमामत का यह सिलसिला बाक़ी रहे और इमाम सज्जाद[अ०] उस अहम ज़िम्मेदारी यानी इमामत का फ़रीज़ा अंजाम दें। यह वक़्ती बीमारी ज़्यादा दिन तक बाक़ी नहीं रही और उसके बाद इमाम सज्जाद[अ०] 35 साल तक ज़िंदा रहे और इस पूरी मुद्दत में आपने ख़िदमते ख़ल्क़, इबादत और मुनाजात में गुज़ार दी। दस मुहर्रम 61 हिजरी में जब आपकी इमामत शुरू हुई तो आपकी उम्र 24 साल थी।

करबला के वाक़िए में उस क़याम और ख़ूनीं वाक़िए से भरपूर फ़ायदा उठाने की ज़रूरत थी और इमाम हुसैन[अ०] की शहादत के पैग़ाम को दूसरों तक पहुँचाने की ज़रूरत थी जिसको इमाम सज्जाद[अ०] ने अपनी फूफी हज़रत ज़ैनब[स०] के साथ क़ैद की ज़िंदगी में बहुत ही बहादुरी के साथ दुनिया के सामने पेश किया और इस तरह इस पैग़ाम को पहुँचाया कि सदियाँ गुज़रने के बाद आज भी पैग़ाम बाक़ी है और हमेशा बाक़ी रहेगा। वाक़िअ-ए-करबला अपनी अज़मत व शानो शौकत और ईमान व मुहब्बत के लेहाज़ से आशूर के दिन अस्र के वक़्त ज़ाहिरी तौर पर तो ख़त्म हो गया था लेकिन इमाम सज्जाद[अ०] और हज़रत ज़ैनब[स०] की असल ज़िम्मेदारी यहीं से शुरु होती है।

इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] ने कूफ़े में क़याम के दौरान दो बार तक़रीर की थी। पहली बार उस वक़्त जब मुनादी करने वालों ने लोगों को असीरों का तमाशा दिखाने के लिए बुलाया था। उस वक़्त कूफ़े में असीरों के लिए ख़ेमे नस्ब किए गए थे। इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] ख़ेमे से बाहर आए और इशारे से लोगों को ख़ामोश करने के बाद इमाम[अ०] ने अपनी तक़रीर को ख़ुदावंदे आलम की तारीफ़ से शुरु किया और फिर रसूले ख़ुदा[स०] पर दुरूद भेजा और फिर इस तरह फ़रमाया, "ऐ लोगो! जो मुझको पहचानता है वह तो पहचानता ही है और जो मुझे नहीं पहचानता है तो वह पहचान ले कि मैं अली बिन हुसैन हूँ, वही हुसैन जिसके सर को फ़ुरात के किनारे बग़ैर किसी जुर्मो ख़ता के बदन से जुदा कर दिया गया है। ऐ लोगो! तुम्हें ख़ुदा की क़सम! क्या तुम्हें याद है कि तुम ने मेरे वादिल को ख़त लिखकर धोखा दिया है? और तुम ने (अपने ख़तों में) उनके साथ अहदो पैमान किया था और उनकी बैअत की थी? इसके बाद तुम ने उनसे जंग की और उनकी कोई मदद नहीं की। वाए हो तुम पर! तुम ने आख़िरत के लिए कितना बुरा ज़ख़ीरा इख़्तियार किया है, तुम रसूले ख़ुदा[स०] के पास किस मुँह से जाओगे?"

जब इमाम[अ०] की तक़रीर यहाँ तक पहुँची तो कूफ़े वाले बुलंद आवाज़ से रोने लगे और उनके ज़मीर जाग गए। वह एक दूसरे को बुरा-भला कहने लगे और यह भी कहने लगे कि हम बर्बाद हो गए।

इमाम सज्जाद[अ०] ने अपनी तक़रीर को जारी रखते हुए फ़रमाया कि जो मेरी बात को क़ुबूल करेगा और ख़ुदा व रसूल की ख़ातिर मैं जो कुछ कह रहा हूँ उस पर अमल करेगा तो ख़ुदावन्दे आलम उसको माफ़ करेगा क्योंकि रसूले ख़ुदा[स०] का तरीक़ा हम सब के लिए नमून-ए-अमल है और फिर आपने यह आयत पढ़ी, "व लकुम फ़ी रसूलुल्लाहि उस्वतुन ह-स-नह्"।

इमाम अ० की तक़रीर ख़त्म होने से पहले कूफ़ियों ने हमदर्दी का इज़हार किया और सब ने एक ज़बान होकर कहा कि ऐ रसूले ख़ुदा[स०] के बेटे! के हम आपका हुक्म मानने को तैयार हैं और आपसे वफ़ादारी का अहद करते हैं, आज के बाद से हम आपके फ़रमांबरदार हैं, आप जिस से भी जंग करने का हुक्म देंगे हम उस से जंग करेंगे और जिस से सुलह करने का हुक्म देंगे उस से सुलह करेंगे और हम ज़ालिमों से आपका और अपना हक़ वापस लेंगे।

इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] ने उनकी शर्मिंदगी भरी बातों और नारों के जवाब में फ़रमाया कि हरगिज़ नहीं! (मैं कभी भी तुम पर भरोसा नहीं करूँगा और तुम्हारे नारों और हिमायत का धोखा

नहीं खाऊँगा)। ऐ ख़यानतकारो और धोकेबाज़ कूफ़ियो! क्या तुम चाहते हो कि मेरे वालिद की तरह मुझ से वादे करके उन पर अमल न करो, क्या तुम मुझ पर भी वही सितम करना चाहते हो?

खुदा की क़सम! तुम ने जो ज़ख़्म लगाया है अभी तक उस से ख़ून बह रहा है और मेरा सीना, अपने वादिल और भाई के ग़म से जल रहा है। मुसीबतों का तल्ख़ मज़ा अभी तक मेरी ज़बान पर है। मैं तुम कूफ़ियों से सिर्फ़ ये चाहता हूँ कि न हमारे साथ रहो और न हमारे ख़िलाफ़ कोई काम करो।



इमाम सज्जाद ने इस तक़रीर के ज़रिए उनकी बेवफ़ाई को ज़ाहिर कर दिया था और कूफ़ियों के दिलों में हसरत की आग को भड़का दिया था। जिससे उनकी शर्मिंदगी में इज़ाफ़ा कर दिया,था।

अगर इमाम हुसैन[अ०] क़त्ल हो गए तो काई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि उन से पहले उनके वालिद को भी तुम ने शहीद कर दिया था। ऐ कूफ़ियो! तुम ने इमाम हुसैन[अ०] पर ज़ुल्म किया है इस पर खुश न हो, जो गुज़र गया वह बहुत अज़ीम वाक़िआ था! मेरी जान क़ुर्बान हो उस शख़सियत पर जिसने फ़ुरात के किनारे जामे शहादत नोश किया। दोज़ख़ की आग उसके लिए है जिसने उनको शहीद किया।

## इब्ने ज़ियाद के दरबार में इमाम सज्जाद[अ०] की तक़रीर

असीरों का क़ाफ़िला जब इब्ने ज़ियाद के दरबार में दाख़िल हुआ तो इब्ने ज़ियाद ने इमाम सज्जाद[अ०] को देखा। इब्ने ज़ियाद समझ रहा था कि करबला के वाक़िए में कोई भी मर्द बाक़ी नहीं बचा है और सब के सब क़त्ल हो गए हैं, उसने अपनी फ़ौज से उनके बारे में सवाल किया और उसके इस तरह के सवाल-जवाब करने से मालूम होता है कि उसको इमाम सज्जाद[अ०] के ज़िन्दा रहने और ख़ानदाने पैग़म्बर[स०] ख़ासकर इमाम हुसैन[अ०] से कितना बुग्ज़ और हसद था यानी इतना बुग्ज़ व हसद था कि वह हज़रत अली[अ०] की किसी औलाद को ज़िन्दा देखना नहीं चाहता था।

मशहूर इस्लामी हिस्टोरियन तबरी लिखते हैं, ''इब्ने ज़ियाद के दरबार में दाख़िल होने के बाद उसने इमाम सज्जाद[अ०] की तरफ़ रुख़ किया और पूछा, तुम्हारा क्या नाम है? इमाम सज्जाद[अ०] ने फ़रमाया कि अली बिन हुसैन। इब्ने ज़ियाद ने कहा कि क्या खुदा ने अली बिन हुसैन को करबला में क़त्ल नहीं किया? इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] कुछ देर ख़ामोश रहे। फिर इब्ने ज़ियाद ने इमाम से कहा कि जवाब क्यों नहीं देते?

इमाम सज्जाद[अ०] ने फ़रमाया, ''अल्लाह ही है जो रूहों को मौत के वक़्त अपनी तरफ़ बुला लेता है। कोई भी जानदार खुदा की इजाज़त के बिना नहीं मर सकता, सबका एक वक़्त तय है।''

इब्ने ज़ियाद ने आपकी हाज़िर जवाबी को देखा तो उसे गुस्सा आ गया और हुक्म दिया कि अली बिन हुसैन[अ०] को भी शहीद कर दिया जाए। लेकिन हज़रत ज़ैनब[स०] ने फ़रमाया, ''ऐ इब्ने ज़ियाद! तूने हमारा जो ख़ून बहाया है क्या वह तेरे लिए काफ़ी नहीं है? खुदा की क़सम! अगर तू इनको क़त्ल करना चाहता है तो मुझे भी इनके साथ क़त्ल कर दे।''

इब्ने ज़ियाद के दरबार के हालात और हज़रत ज़ैनब[स०] की तक़रीर की वजह से इब्ने ज़ियाद, इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] को क़त्ल करने से बाज़ आ गया।

इमाम सज्जाद दरबार में भी इमाम हुसैन के मक़सद और आपके पैग़ाम को लोगों तक पहुँचाते रहे और क़ैद से रिहाई के बाद भी आप अपनी दुआओं और गिरये के ज़रिये लोगों तक करबला का पैग़ाम पहुँचाते रहे। अगर आप न होते तो इमाम हुसैन की मज़लूमियत हम तक न पहुँचती और यज़ीद अपने मक़सद में कामयाब हो जाता।

1-लहूफ़, 2-सूरए ज़ुमर/42, 3-सूरए आले इमरान/145, 4-तारीख़े तबरी, 4 /350, 5-अल-इरशाद, 6-तारीख़ुल ख़ुलफ़ा

# एक क़ौम की कहानी

फ़साहत हुसैन

*बनी इस्राईल ख़ुदा की नज़र में एक बहुत अज़ीम क़ौम थी जिसमें बहुत से नबी आए थे। ख़ुदा ने उस क़ौम को अपनी बहुत सी नेमतें दीं थीं और उसे फ़िरऔन के ज़ुल्म से बचाया था। लेकिन कुछ सालों बाद यही अज़ीम क़ौम ख़ुदा की नज़र में गिर गई और ख़ुदा ने उस पर अज़ाब नाज़िल किया। ऐसा क्या हुआ कि ख़ुदा जिस क़ौम को चाहता था उसी पर उसने अज़ाब नाज़िल कर दिया ? उसमें कैसी बुराइयाँ पैदा हो गई थीं ? आइए इस आर्टिकल में इन्हीं सवालों का जवाब ढूँढते हैं...*

जनाबे यूसुफ़[अ०] के ज़माने में उनके भाई और जनाबे याक़ूब[अ०] अपने शहर में सूखा पड़ने की वजह से मिस्र चले गए थे और वहीं एक शहर में बस गए थे। जनाबे याक़ूब के बारह बेटे थे और उन बेटों से चलने वाली इसी नस्ल को बनी इस्राईल कहा जाता है। मिस्र में बनी इस्राईल का ख़ानदान हर तरफ़ फैल गया था। मिस्र में रहने वाली नस्ल "क़िब्ती" इस ख़ानदान के लोगों को बहुत गिरी हुई निगाह से देखती थी और उस पर बहुत ज़ुल्म ढाती थी।

जब जनाबे मूसा को नुबुव्वत मिली तो ख़ुदा ने उन्हें हुक्म दिया कि वह मिस्र जाकर फ़िरऔन और उसकी क़ौम वालों से कहें कि वह बुतों की पूजा छोड़कर एक ख़ुदा की इबादत करें। और बनी इस्राईल को बादशाह के ज़ुल्म से बचाएं। जनाबे मूसा बादशाह के दरबार में आकर उसको समझाते हैं कि वह एक ख़ुदा की इबादत करे और बनी इस्राईल पर ज़ुल्म न करे लेकिन दरबार में जनाबे मूसा का मज़ाक़ उड़ाया जाता है। फिर भी कुछ लोग उन पर ईमान ले आते हैं और कुछ लोग बादशाह की धमकियों से डर कर ईमान नहीं लाते।

काफ़ी दिन इस तरह से गुज़र जाते हैं और ज़ुल्म का यह सिलसिला नहीं रुकता तो ख़ुदा जनाबे मूसा को हुक्म देता है कि बनी इस्राईल को लेकर नील नदी के पार चले जाओ। जनाबे मूसा अपनी क़ौम वालों को लेकर नील नदी की तरफ़ चल पड़ते हैं। जब वह सब नील के पास पहुँचते हैं तो उन्हें फ़िरऔन का लश्कर आता हुआ दिखाई देता है। क़ौम वाले परेशान हो जाते हैं। ख़ुदा जनाबे मूसा को हुक्म देता है कि पानी में अपनी लाठी मारो जिससे नील नदी में रास्ता बन जाता है। जनाबे मूसा की क़ौम उस पार चली जाती है और फ़िरऔन अपने लश्कर समेत उस नदी में डूब जाता है। डूबते वक़्त ख़ुदाई का दावा करने वाला फ़िरऔन तौबा करना चाहता है लेकिन अज़ाब को देखने के बाद अब तौबा का कोई फ़ाएदा नहीं था।

ख़ुदा ने बनी इस्राईल को इतने बड़े ज़ालिम से निजात दी थी और उन्होंने अपनी आँखों से देखा था कि किस तरह ख़ुदा ने उन्हें नदी के बीचो-बीच से निकाला था और फ़िरऔन को उसी नदी में डुबो दिया था। होना तो यह चाहिए था कि उन सबका एक ख़ुदा पर ईमान और मज़बूत हो जाता और बुतों की पूजा करने वाले दूसरे लोगों को भी ख़ुदा की तरफ़ बुलाते लेकिन जैसे ही वह उस पार पहुँचते हैं और एक दूसरी क़ौम को बुतों की पूजा करते हुए देखते हैं तो उनमें से बहुत से लोग मूसा[अ०] से आकर कहते हैं कि हमारे लिए भी ऐसे ही बुत बना दीजिए ताकि हम उनकी इबादत करें। मूसा[अ०] उन से कहते हैं कि तुम लोग बहुत नादान हो और फिर उनको समझाते हैं कि यह लोग ग़लत काम कर रहे हैं और इनका यह काम उनको कोई फ़ाएदा नहीं पहुँचाएगा। ख़ुदा ने तुम्हें इन सब पर फ़ज़ीलत दी है।

नील से निकलने के बाद वह लोग एक तपते हुए मैदान में थे जहाँ उनको खाना, पानी और सूरज की गर्मी से बचने के लिए साए की ज़रूरत थी। ख़ुदा ने पत्थर से पानी निकाला, उनके सरों

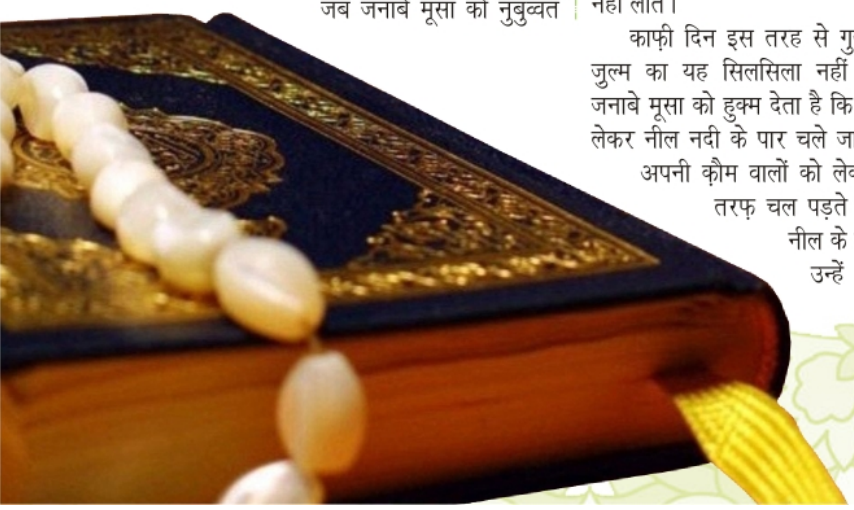

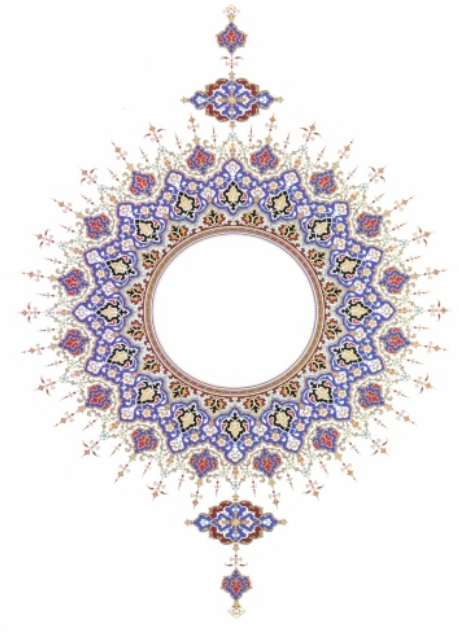

पर बादलों का साया कर दिया और मैदान में उनके लिए अच्छे खाने का इन्तेज़ाम भी कर दिया। ऐसी जगह पर जो कुछ मिल जाए, उसे खाकर उन्हें ख़ुदा का शुक्र करना चाहिए था और मूसा अ० की हर बात मान लेना चाहिए थी लेकिन बाद में वह लोग जनाबे मूसा से आकर नए-नए खानों की फ़रमाइश कर रहे थे।

ख़ुदा की तरफ़ से जनाबे मूसा को हुक्म हुआ कि वह तीस दिन अपनी क़ौम से दूर 'तूर' नाम की जगह पर चले जाएं। जनाबे मूसा, हारून अ० को अपनी जगह क़ौम का लीडर बनाकर चले गए। ऐसे वक़्त में बनी इस्राईल का बहुत बड़ा इम्तेहान होता है और उनमें से बहुत से लोग इस इम्तेहान में नाकाम हो जाते हैं। सामरी नाम के आदमी ने सोने-चाँदी का एक बछड़ा बना दिया था और उन से उसकी पूजा करने के लिए कह रहा था। बनी इस्राईल मिस्र में ऐसी क़ौम के बीच रह रहे थे जो बुतों की पूजा करती थी। जिससे उनके दिलों में भी बुतों की पूजा करने की तमन्ना पैदा हो गई थी जिसे उन्होंने नील से पार होते ही जनाबे मूसा से बयान किया था। इसलिए वह सामरी के प्रोपगन्डे के आगे झुक गए और उन्होंने उस बछड़े की पूजा शुरु कर दी।

उनमें से बहुत से लोग ख़ुदा और उसके नबी मूसा अ० को सिर्फ़ इसलिए मानते थे ताकि उन से अपनी बातें मनवा सकें, जब जो कुछ दिल में आए उन से फ़रमाइशें करें, मुश्किलों में मूसा अ० का साथ देने के बजाए मूसा अ० से ख़िदमत लेते रहें और मूसा अ० की बात मानने के बजाए उन से रंग बिरंगे खाने और दूसरी तरह की चीज़ें माँगते रहें। वह यह नहीं जानते थे कि ख़ुदा का भेजा हुआ नुमाइंदा इसलिए होता है कि लोग उस से गाइडेंस लें और ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा और सलीक़ा सीखें न यह कि उस से सिर्फ़ अपनी मन्नत और मुराद पूरी करने के लिए कहें।

सामरी ने उन लोगों की सारी कमज़ोरियों से फ़ाएदा उठाया। और तौहीद और ख़ुदा की इबादत से दूर करके उन्हें बुतपरस्त बना दिया।

एक ऐसी क़ौम जिसको ख़ुदा ने इतनी नेमतें दी हों और उसे दूसरी क़ौमों की हिदायत करना हो, वह दूसरी क़ौमों के लिए आइडियल हो, अगर वह तौहीद के रास्ते से हट जाए तो ख़ुदा उसे कैसी सख़्त सज़ा देता है? मूसा अ० ने तौहीद छोड़कर बेजान चीज़ की पूजा करने वालों से कहा कि तुम्हारे गुनाह माफ़ होने का एक ही रास्ता है और वह यह है कि तुम लोग एक दूसरे को क़त्ल कर दो। बहरहाल उनकी तौबा क़ुबूल हो जाती है।

लेकिन बनी इस्राईल ऐसी क़ौम थी जो हर बार तौबा क़ुबूल होने के बाद मूसा अ० की मुख़ालेफ़त करती थी। कभी वह लोग कहते थे कि हम आपके ख़ुदा को अपनी आँखों से देखेंगे तो कभी मूसा अ० दुश्मनों से जंग करने के लिए कहते थे तो वह उन्हें जवाब दे देते थे कि आप और आपका ख़ुदा जाकर जंग कीजिए। हम लोग यहीं पर रहेंगे। अब ख़ुदा ने उन पर अज़ाब नाज़िल किया। वह चालीस साल तक एक चटियल मैदान में घूमते रहे।

इन लोगों के अंदर सबसे बड़ी बुराई यह थी कि वह यह समझते थे कि अगर वह मूसा अ० को अपना नबी मानते हैं तो उनके लिए यही काफ़ी है और उनकी बात मानना ज़रूरी नहीं है। वह यह समझते थे कि हमेशा मूसा अ० से मदद माँगी जाए और जब वह मदद के लिए बुलाएं तो तरह-तरह के बहाने बनाकर अपनी ज़िंदगी में मस्त रहा जाए। ख़ुदा के नबी से हिदायत लेने के बजाए उस से सिर्फ़ ख़िदमत ली जाए। इन तमाम बातों की वजह से दुनिया ने देखा कि ख़ुदा ने उस क़ौम पर न जाने कितनी बार अज़ाब नाज़िल किया, वह कई जंगों में हारती रही और ज़िल्लत बर्दाश्त करती रही।

वह क़ौम जो दूसरी क़ौमों के निगाह में इज़्ज़त वाली समझी जाती थी, जिसे ख़ुदा ने बहुत सी ऐसी नेमतें दी थीं जो उस वक़्त तक किसी दूसरी क़ौम को नहीं दी गई थीं, अपने रहनुमाओं की बात न मानने और मनमानी करने की वजह से दुनिया वालों की नज़र में भी ज़लील हुई और ख़ुदा की निगाह में भी।

क़ुरआन इस तरह की दास्तानें बयान करके हम से कहता है, "अगर तुम्हारे पास अक़्ल है तो इन क़ौमों के हालात से सबक़ लो।"

# इमामे ज़माना अ० के ख़ास नायब

■ सैय्यद मुहम्मद जव्वाद

इमाम ज़मानाअ० की 69 साल की ग़ैबते सुग़रा के दौरान आपअ० की इमामत की शुरूआत से चौथे ख़ास नायब की वफ़ात तक इमामअ० के मानने वाले शीया चार ख़ास नायबों के ज़रिए से कभी ज़बानी और कभी तहरीरी सूरत में इमामअ० से अपने मसलों और मुश्किलों का हल पूछते थे। इन चार सफ़ीरों या नायबों के नाम यह हैं:-

1- अबू अम्र व उस्मान बिन सईद अमरी

2- अबू जाफ़र मुहम्मद बिन उस्मान बिन सईद अमरी

3- अबुल क़ासिम हुसैन बिन रोह नौ बख़्ती

4- अबुल हसन अली बिन मुहम्मद समरी

इस बार हम इन हज़रात की ज़िंदगियों का एक हलका सा ख़ाका आपके लिए पेश कर रहे हैं।

## 1- उस्मान बिन सईद

यह इमाम अली नक़ीअ० और इमाम हसन असकरीअ० के वफ़ादार सहाबी और वकील थे और दोनों इमामों को उन पर पूरा भरोसा था। इमाम अली नक़ीअ० उनके बारे में फ़रमाते हैं, "वह जो कुछ तुमसे कहें उन्होंने मेरी तरफ़ से कहा है और जो कुछ तुम तक पहुँचाएं, वह मेरी तरफ़ से पहुंचाया है।"

इमाम हसन असकरीअ० फ़रमाते हैं, "यह अबू अम्र हैं जो भरोसेमंद और अमानतदार हैं। यह ज़िंदगी और मौत में पिछले इमाम (इमाम अली नक़ीअ०) और मेरे लिए भरोसेमंद हैं। यह जो कुछ तुमसे कहें, वह उन्होंने मेरी तरफ़ से कहा है और जो कुछ तुम्हें पहुँचाएं मेरी तरफ़ से पहुंचाया है।"

उन्हें सम्मान भी कहा जाता है क्योंकि यह तेल बेचते थे। यह काम उन्होंने इसलिए शुरू किया था ताकि उनकी पहचान न हो सके। जब भी उस ज़माने के शिया इमाम हसन असकरीअ० के पास ख़ुम्स या ज़कात वग़ैरा की रक़म भेजना चाहते थे तो उसे उस्मान बिन सईद को दे देते थे और वह उन पैसों को तेल के बर्तन में छुपाकर इमामअ० के पास पहुँचा दिया करते थे। एक रोज़ इमामअ० के मानने वाले चालीस लोग इमामअ० के पास आए और सवाल किया, "आपके बाद इमाम कौन है?"

अचानक चौधवीं के चांद की तरह एक ख़ूबसूरत बच्चा जिसके चेहरे पर नूर फैला हुआ था और शक्ल व सूरत में इमाम असकरीअ० की शबीह था, कमरे में दाख़िल हुआ। हज़रतअ० ने उस बच्चे को देखकर फ़रमाया, "यह तुम्हारा इमाम और मेरे बाद मेरा जानशीन है। इनकी इताअत करना तुम पर वाजिब है और मेरे बाद अलग अलग न हो जाना कि तुम्हारा दीन तबाह हो जाए। हाँ! आज के बाद तुम उसे नहीं देख सकोगे। यहां तक कि वह लंबी उम्र गुज़ारेगा। उस वक़्त उस्मान बिन सईद की तरफ़ रुख़ करना और वह जो कुछ तुमसे कहें उस पर अमल करना। उनसे अपने इमामअ० के अहकाम पूछना। उनकी बातों को क़ुबूल करना क्योंकि वह तुम्हारे इमामअ० के जांनशीन हैं और उनका हुक्म मानना वाजिब है।"

इस तरह इमाम हसन असकरीअ० ने अपनी ज़िंदगी में ही इमाम मेहदीअ० के सफ़ीर को तय कर दिया था और उनके हुक्म को इमामअ० का हुक्म बताया था और शियों को उनकी इताअत, पैरवी और उनकी बात को दिल व जान से क़ुबूल करने का हुक्म दिया था।

जी हां! जो फ़ज़ीलत उन्हें हासिल थी और जिस तरह उन्होंने अपनी ज़िंदगी इमामोंअ० की ख़िदमत में गुज़ारी थी, उसके बाद वह इस क़ाबिल हो गए थे कि ऐसे ऊँचे मक़ाम पर फ़ायज़ हो जाएं कि मासूम इमाम और उम्मत के बीच राब्ते का ज़रिया बन जाएं और हमेशा इमाम मेहदीअ० की ख़िदमत में पहुँचते रहें। चुनांचे आप मरते दम तक शियों की मुश्किलों और सवालों को इमामअ० की ख़िदमत में पहुंचाते रहे और जवाब

वसूल करते रहे।

यह बुर्ज़ुग हस्ती यूँ ही अपना काम अंजाम देती रही यहां तक कि वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया और आप दुनिया से चले गए। आपके बेटे मुहम्मद बिन उस्मान ने उन्हें मदीनतुस सलाम, बग़दाद में दफ़न किया।

### 2- मुहम्मद बिन उस्मान

इमामे मेहदी[अ॰] के हुक्म पर उस्मान बिन सईद के ज़रिए उनके बेटे मुहम्मद बिन उस्मान इमाम के नाएब बने। वैसे इमाम हसन असकरी[अ॰] ने भी अपने ज़माने में उनका तआर्रुफ़ करवा दिया था। एक रिवायत में है कि इमाम हसन असकरी[अ॰] ने फ़रमाया, "गवाह रहना कि उस्मान बिन सईद अमरी मेरे वकील हैं और उनका बेटा मुहम्मद बिन उस्मान मेरे बेटे मेहदी[अ॰] का वकील है।"

एक और जगह फ़रमाया, "अमरी और उनका बेटा दोनों मेरे लिए भरोसेमंद हैं, बस वह जो कुछ तुम से बयान करें वह मेरी तरफ़ से है। और जो कुछ कहें वह उन्होंने मेरी तरफ़ से कहा है, इसलिए उनकी बातों को ग़ौर से सुनना और उनके हुक्म पर अमल करना क्योंकि यह दोनों भरोसेमंद और अमानतदार हैं।"

इस रिवायत में हज़रत ने दोनों (बाप, बेटे) को एक ही मक़ाम पर रखा है और दोनों के लिए एक जैसी फ़ज़ीलत ही बयान की है। चुनांचे उन्हें अपना वकील और भरोसे वाला बताया और लोगों को उनकी बातों पर अमल करने और उनके अहकाम की इताअत करने की ताकीद की। बेशक यह इंसानी शख़्सियत की बुलंदी है।

मुहम्मद बिन उस्मान न सिर्फ़ यह कि इमामे ज़माना[अ॰] के वकील और सफ़ीर थे जो ख़ुद उनकी आला इल्मी शख़्सियत और अज़मत की दलील है, बल्कि वह इल्मे फ़िक़्ह की बहुत सी किताबों के लिखने वाले भी हैं और जो कुछ उन्होंने इमाम हसन असकरी[अ॰] और इमामे ज़माना[अ॰] से सुना, उसे किताब की शक्ल में लिख दिया था। चुनांचे वह नक़ल करते हैं, "ख़ुदा की क़सम! हज़रत इमाम मेहदी[अ॰] हर साल हज के मौसम में आते हैं। लोगों को देखते हैं, उन्हें पहचानते हैं। लोग भी उन्हें देखते हैं लेकिन नहीं पहचानते।"

मैंने इमामे ज़माना[अ॰] को काबे का पर्दा थामे यह कहते सुना है, "ऐ ख़ुदा! मेरे वसीले से अपने दुश्मनों से इंतेक़ाम ले।" आख़िरी बार जब मैं इमाम[अ॰] के पास गया तो मैंने इमाम[अ॰] को ख़ानए काबा के पास खड़े देखा। आप[अ॰] कह रहे थे, "ऐ ख़ुदा! जो मुझसे वादा किया है, उसे पूरा कर दे।"

उसके बाद आपने अपने दोस्तों को ख़बर दी कि किस दिन में दुनिया से चला जाऊँगा! कहते हैं कि उन्होंने ख़ुद अपने लिए क़ब्र बनाई और कहा कि मुझे हुक्म मिला है कि मरने के लिए तैयार हो जाऊँ। इस तरह मुहम्मद बिन उस्मान ने 304 या 305 हिजरी में वफ़ात पाई। उन्हें उनकी माँ की क़ब्र के पास बग़दाद में दफ़न किया गया।

### 3- हुसैन बिन रौह

मुहम्मद बिन उस्मान ने अपनी वफ़ात से दो साल पहले तमाम शिया बुर्ज़ुगों को जमा किया और उनसे कहा कि मुझे हुक्म मिला है कि हुसैन बिन रौह की पहचान तुम सब से करा दूँ ताकि तुम मेरे बाद उनकी तरफ़ रुजू कर सको और उन पर भरोसा कर सको।

बहुत सी रिवायतों में आया है कि उनसे पूछा गया कि अगर आपके साथ कोई हादसा पेश आ जाए तो फिर हम किसकी तरफ़ रुजू करें? यानी आपके बाद जांनशीन कौन होगा?

उन्होंने जवाब दिया, "अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह बिन अबी बहर नौ बख़्ती मेरे जानशीन और इमाम मेहदी[अ॰] के सफ़ीर होंगे। वह इमामे ज़माना[अ॰] के वकील और भरोसेमंद और अमानतदार इंसान हैं। बस उनकी तरफ़ रुजू करना और अपने तमाम कामों और मुश्किलों में उन पर भरोसा करना। मैं इस हुक्म पर मामूर हूं और गवाह रहना कि मैंने यह हुक्म तुम तक पहुंचा दिया है।"

इमामे ज़माना[अ॰] के दूसरे सफ़ीर मुहम्मद बिन उस्मान की जाफ़र बिन अहमद बिन मुअल्ला नामी एक शिया बुर्ज़ुग से बहुत दोस्ती थी। हमेशा उनके घर में आना-जाना रहता था। उनकी दोस्ती को देखकर सब यही समझते थे कि मुहम्मद बिन उस्मान के बाद जाफ़र बिन अहमद ही उनके जांनशीन होंगे। लेकिन जाफ़र बिन अहमद ख़ुद कहते हैं कि जिस वक़्त मुहम्मद बिन उस्मान की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, मैं उनके सरहाने बैठा उनसे बातें कर रहा था जबकि हुसैन बिन रौह पायंती की तरफ़ बैठे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि, मुझे हुक्म मिला है कि अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह के लिए ऐलान कर दूँ और उन्हें अपनी जगह तय कर दूँ। मैंने जैसे ही यह सुना फ़ौरन उनके सरहाने से उठा और हुसैन बिन रौह का हाथ पकड़ कर उन्हें अपनी जगह बिठाया और ख़ुद उनकी जगह मुहम्मद बिन उस्मान की पायंती में बैठ गया। हुसैन बिन रौह ने हुक्म पाते ही कि वह हज़रत[अ॰] के सफ़ीर हैं, अच्छी तरह से अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम देना शुरू कर दिया यहां तक कि आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया और आप शाबान के महीने में सन् 326 हिजरी में दुनिया से चले गए।

### 4- अली बिन मुहम्मद समरी

इमामे ज़माना[अ०] के तीसरे सफ़ीर हुसैन बिन रौह ने वफ़ात से पहले शिया बुर्ज़ुगों को जमा किया और अपने जांनशीन के तौर पर अली बिन मुहम्मद समरी का तआर्रुफ़ कराया। यूं अली बिन मुहम्मद सिमरी इमामे ज़माना[अ०] के चौथे नायब तय हुए। यह बुर्ज़ुगवार दो या तीन साल तक इमाम[अ०] के सफ़ीर की हैसियत से इमाम और शियों के बीच राब्ते का काम अंजाम देते रहे। उनकी वफ़ात से पहले इमामे ज़माना[अ०] की तरफ़ से एक फ़रमान जारी हुआ।

"ऐ अली बिन मुहम्मद समरी! ख़ुदा तुम्हारे भाईयों को तुम्हारी मौत पर अज़ीम अज्र दे। बेशक तुम छः दिन बाद वफ़ात पा जाओगे। बस ख़ुद को तैयार कर लो और अपने बाद किसी के लिए सिफ़ारिश न करना क्योंकि तुम्हारे बाद कोई तुम्हारा जांनशीन नहीं होगा। अब ग़ैबते कुबरा का आग़ाज़ हो गया है और अब ज़ुहूर नहीं होगा। (यानी मैं नज़र नहीं आऊँगा) मगर यह कि एक लंबे वक़्त के बाद जब लोग पत्थर दिल हो जाएंगे और ज़मीन ज़ुल्म व जौर से भर जाएगी। वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह...।"

रावी कहता है हम छठे रोज़ उनके पास पहुंचे तो देखा कि वह मरने के क़रीब हैं। हमने पूछा कि आपके बाद जांनशीन कौन होगा?तो फ़रमाया, "ख़ुदा का हुक्म है वह ख़ुद अंजाम देगा।"

फिर वह दुनिया से चले गए। इमामे ज़माना[अ०] के आख़िरी सफ़ीर की तारीख़े वफ़ात 15 शाबान 328 या 329 हिजरी है। ख़ुदा उन पर और उनके दोस्तों पर अपनी बेपनाह रहमतें नाज़िल फ़रमाए। दरूद व सलाम हो इमामे ज़माना[अ०] के सफ़ीरों पर और ख़ुदावंदे आलम इस ग़ैबते कुबरा को बहुत जल्द ख़त्म कर दे और हमारे इमाम[अ०] का जल्द से जल्द ज़ुहूर फ़रमा। आमीन!

# मगर... हिजाब नहीं छोड़ा

*ज़ेहरा गोन्ज़ाल्स एक अमेरीकी शिया मुसलमान हैं। उन्होंने एक इंटरव्यु में यूरोपियन मुल्कों की मुसलमान औरतों के लिए पर्दे के सिलसिले में पाई जाने वाली मुश्किलों के बारे में बात करते हुए कहा कि मुसलमान औरतें यूरोपी मुल्कों में ख़ुद को बा-हिजाब रखने के लिए बहुत ज़्यादा सख़्तियाँ झेलती हैं। इस बारे में बात करते हुए उन पर एक तरह की कपकपाहट तारी थी। उन्होंने कहा कि मुझे यह जानकर अफ़सोस होता है कि बहुत से इस्लामी मुल्क ऐसे भी हैं जहाँ पर हिजाब की आज़ादी है और मुसलमान औरतें आसानी से अपनी इज़्ज़त व आबरू को महफ़ूज़ रख सकती हैं मगर इसके बावजूद कुछ औरतें अपने हिजाब का ख़याल नहीं रखतीं।*

*उन्होंने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मेरी उम्र कोई 12-13 साल होगी जब मेरी माँ ने इस्लाम क़ुबूल किया था। मेरी माँ ने मुसलमान होने के बाद किसी ज़बरदस्ती के बग़ैर मुझे और मेरे बहन भाईयों को इस्लाम की दावत दी जिसे हम सब ने बड़ी मोहब्बत और चाहत के साथ क़ुबूल कर लिया और इस्लाम मज़हब में आ गए। उस दिन के बाद से मैं जब भी बाहर आती थी तो हिजाब के साथ बाहर आया करती थी। मुझे अच्छी तरह से वह दिन याद है जब कालेज में पहली बार मैं सर पर स्कार्फ़ रख कर गई थी। उस दिन मैंने स्कार्फ़ बाँध कर बार-बार ख़ुद को आईने के सामने देखा था। मैं स्कार्फ़ पहन कर बड़ी ख़ुशी महसूस कर रही थी और चाहती थी कि मेरे दोस्त मेरी इस ख़ुशी में शामिल हों। मेरा तो ख़याल यह था कि मेरे सारे दोस्त मेरे इस स्कार्फ़ को देखकर बहुत ख़ुश होंगे मगर उस सुबह जैसे ही कालेज की बस पहुँची, मुझे देखते ही सारे बच्चे भौचक्का रह गए। उसके बाद एक ने आवाज़ लगाई कि इसे देखो! सर पर क्या रखा है। एक दूसरे बच्चे ने मेरी तरफ़ गंदी चीज़ भी फेंकी। मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ और मेरा दिल चाह रहा था कि बस से उतर कर भाग जाऊँ मगर इसी दौरान बस ड्राइवर ने दरवाज़ा बंद करते हुए बस को चला दिया था। मैं बड़ी मुश्किल से अपनी जगह पर जाकर बैठी।*

*उस दिन मैंने स्कूल तक की दूरी बहुत ही मुश्किल के साथ तै की मगर उन सब की तंज़िया बातों और बद-तमीज़ियों को बर्दाश्त करती रही। कालेज पहुँच कर मुझे यह एहसास हुआ कि जैसे मेरा स्कार्फ़ गीला हो चुका है। बाद में मुझे पता चला कि मेरे पीछे बैठे हुए बच्चे बारी-बारी मेर सर पर थूकते रहे थे जिसकी वजह से मेरा स्कार्फ़ गीला हो गया था।*

*इसके बाद यह वाक़िआ क़रीब-क़रीब हर रोज़ मेरे साथ पेश आता था जिसकी वजह से मैं हमेशा दो या तीन स्कार्फ़ अपने साथ रखा करती थी ताकि अगर एक गंदा हो जाए तो उतार कर दूसरा पहन लूँ।*

*ज़ेहरा गोन्ज़ाल्स बड़े जज़्बे के साथ यह सारी दास्तान बयान कर रही थीं और ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे वह बिल्कुल भी उन यादों से ग़मगीन और परेशान नहीं थीं। उन से जब पूछा गया कि क्या उन बातों को याद करके आपको दुख होता है तो उन्होंने जवाब दिया, "क्या मैं जनाबे ज़ैनब[अ०] से अफ़ज़ल हूँ? जिन्होंने करबला के सारे दुखों और तकलीफ़ों को ख़ुशी के साथ बर्दाश्त कर लिया था।"*

# खीरे वाला

■ शहीद मुतह्हरी

दूसरी सदी हिजरी में औरत को एक साथ तीन तलाक़ देने के मसले पर उलमा के बीच बहस चल रही थी। उस ज़माने के बहुत से उलमा व फ़ुक़हा इस बात को मानते थे कि एक बार में तीन तलाक़ बग़ैर रुजू के सही हैं। लेकिन शिया उलमा व फ़ुक़हा अइम्मा मासूमीन[अ०] की पैरवी की वजह से इस तरह की तलाक़ को ग़लत मानते हैं। शिया फ़ुक़हा यह कहते हैं कि औरत को तीन तलाक़ देना उस वक़्त सही है जब तीन बार अलग-अलग दी जाए। इस तरह कि मर्द औरत को तलाक़ दे और फिर रूजू करे यानी तलाक़ के बाद फिर दोनों साथ रहने लगें। इसी तरह दोबारा तलाक़ दे और फिर दोनों में एका हो जाए और दोनों साथ रहने लगें। इस तरह जब तीसरी बार तलाक़ देगा तो औरत के इद्दे के ज़माने में मर्द का यह हक़ ख़त्म हो जाएगा कि फिर औरत से सुलोह करे। इद्दत के बाद भी दोबारा शादी का हक़ नहीं रखता मगर यह कि उस औरत की शादी किसी दूसरे मर्द से हो जाए और उन दोनों की हमबिस्तरी करने के बाद उनके बीच तलाक़ या वफ़ात के ज़रिए जुदाई हो जाए।

कूफ़े में एक शख़्स ने अपनी बीवी को एक बार में तीन तलाक़ दे दीं और बाद में इस पर बहुत अफ़सोस करने लगा क्योंकि वह अपनी बीवी से बहुत मोहब्बत करता था और सिर्फ़ एक मामूली सी रंजिश की बिना पर जुदाई का फ़ैसला कर लिया था।

औरत भी अपने शौहर से मोहब्बत करती थी। इस वजह से दोनों इस मुश्किल को हल करने में लग गए। इस मसले के सिलसिले में जब शिया उलमा से मालूम किया गया तो सबने यही कहा कि जब तीन तलाक़ एक दफ़ा में हुई हैं तो बातिल हैं और इस वजह से तुम दोनों अब भी शरअन व क़ानूनन मियाँ और बीवी हो, लेकिन दूसरी तरफ़ आम लोग अपने तमाम उलमा व फ़ुक़हा की पैरवी की वजह से यह कहते थे कि यह तलाक़ सही है और उन दोनों को एक साथ रहने से रोकते थे।

अजीब मुश्किल पैदा हो गई थी, शुदीशुदा ज़िंदगी में हराम व हलाल का मसला आ गया था। दोनों मर्द व औरत यही चाहते थे कि पहले की तरह अपनी ज़िंदगी गुज़ारते रहें लेकिन फ़िक्रमंद भी थे कि कहीं ऐसा न हो कि तलाक़ सही हो और उसके बाद उनकी हमबिस्तरी हराम होने की वजह से उनकी आगे की औलाद नाजाएज़ हो जाए। मर्द ने सोचा कि शिया उलमा के फ़तवे पर अमल करे और दी हुई तलाक़ को बातिल मान ले। औरत ने कहा कि जब तक तुम अपने आप इस मसले को इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से मालूम करके जवाब नहीं लोगे तब तक मेरा दिल नहीं मानेगा।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] उस वक़्त कूफ़ा के नज़दीक क़दीम शहर "हीरह" में रह रहे थे। उनको एक मुद्दत से अब्बासी ख़लीफ़ा सफ़्फ़ाह ने इस जगह मदीने से बुलाकर नज़रबंद कर रखा था और कोई भी इमाम[अ०] से मुलाक़ात या बात नहीं कर सकता था। उस मर्द ने बहुत चाहा कि अपने आप को किसी भी तरह से इमाम[अ०] की ख़िदमत में पहुँचा दे लेकिन कामयाब नहीं हो सका। एक दिन वह इमाम[अ०] के घर तक पहुँचने की फ़िक्र में था कि अचानक एक देहाती को देखा जो कि सर पर खीरे का टोकरा रखे आवाज़ लगा रहा था,

"खीरा ले लो खीरा।"

उस देहाती शख़्स को देखते ही दिमाग़ ने बिजली की तरह काम किया। आगे बढ़कर उस से कहा, "इन तमाम खीरों को कितने में बेचोगे?"

"एक दिरहम में।"

"लो यह एक दिरहम।"

उसने उस देहाती शख़्स से कहा कि कुछ मिनट के लिए पहनने को अपनी पगड़ी दे दो और उसे जल्द वापस करने का वादा किया। देहाती ने यह बात मान ली। उसने देहाती पगड़ी पहन कर अपने आपको देखा, बिल्कुल एक देहाती लग रहा था। खीरे की टोकरी सर पर रखी और "खीरा ले लो खीरा, खीरा ले लो खीरा" की आवाज़ लगाई और अपना मक़सद हासिल करने के लिए इमाम[अ०] के घर के पास से गुज़रा। जैसे ही इमाम[अ०] के घर के सामने पहुँचा। एक गुलाम बाहर आया और उसने कहा, "ऐ खीरे वाले! यहाँ आओ।" पहरेदारों को पता भी नहीं चला और वह बड़ी आसानी से इमाम के पास पहुँच गया। इमाम[अ०] ने उस से फ़रमाया,

"बहुत अच्छे! तुम ने बेहतरीन तरकीब इस्तेमाल की है। अब कहो कि क्या पूछना चाहते हो?"

"ऐ रसूल[स०] के बेटे! मैंने अपनी बीवी को एक बार में तीन तलाक़ दी हैं जबकि मैंने सारे शिया उलमा से पूछा है और सबने यही कहा है कि इस तरह की तलाक़ बातिल है, लेकिन फिर भी मेरी बीवी का दिल मुतमइन नहीं है। वह यह कहती है कि जब तक तुम ख़ुद इमाम[अ०] से सवाल करके जवाब नहीं ले लोगे मैं क़ुबूल नहीं करूँगी। इस वजह से इस तरकीब के ज़रिए मैं आपके पास पहुँचा हूँ ताकि इस मसले का जवाब ले सकूँ।"

"जाओ, इत्मिनान रखो कि यह तलाक़ बातिल है और तुम दोनों शरई व क़ानूनी तौर पर एक-दूसरे के मियाँ-बीवी हो।" ●

सै. आलिम हुसैन रिज़वी
रिटायर्ड असिस्टेंट जनरल मैनेजर
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, वाराणसी

# ईरान में पैग़म्बरों का वुजूद

इस दुनिया को पैदा करने वाले अल्लाह ने अपने बंदों की हिदायत के लिए हर क़ौम, इलाक़े और मुल्कों में पैग़म्बर भेजे। अल्लाह अपने कलामे पाक क़ुरआन में फ़रमाता है, ''हम ने तो हर उम्मत में एक न एक रसूल इस बात के लिए ज़रूर भेजा कि लोगो! ख़ुदा की इबादत करो और तागूत से बचे रहो।'' (1)

ज़ाहिर है अल्लाह की बात ग़लत नहीं हो सकती इसलिए यह तो यक़ीनी है कि अल्लाह ने ईरान में भी पैग़म्बर भेजे होंगे।

इस सिलसिले में पहला नाम ''ज़रतुश्त'' का आता है। एक नज़रिए के मुताबिक़ यह भी अल्लाह के पैग़म्बर थे जो ईरान वालों की हिदायत के लिए भेजे गए थे। यह साहेबे किताब थे। इनकी किताब ''अविस्ता'' थी। इस किताब में हज़रत मोहम्मद[ﷺ] के बारे में पेशेनगोई भी है। उनके मानने वाले ज़रतुश्ती या पारसी कहलाते हैं जो हिन्दुस्तान में भी काफ़ी तादाद में पाए जाते हैं। यह और बात है कि हज़रत ईसा की तरह ज़रतुश्त की टीचिंग्स भी बदल दी गई होंगी और उनके मानने वाले आग की पूजा करने लगे।

इसके अलावा भी बहुत से पैग़म्बरों की क़ब्रें ईरान में हैं। कुछ के बारे में रिवायतें हैं और कुछ क़ब्रों को ईरान के Archaeological Survey के मोहकमे ने अपने यहाँ दर्ज कर लिया है और उनकी हिफ़ाज़त की जा रही है। ईरान में जिन पैग़म्बरों की क़ब्रें अब भी मौजूद हैं उनके बारे में यहाँ बयान किया जा रहा है।

## हज़रत दानियाल[अ]

हज़रत दानियाल, हज़रत दाऊद[अ] की नस्ल से थे और यूहन्ना के बेटे थे। उनकी किताब में भी आने वाले वाक़िआत और रसूले इस्लाम के बारे में पेशीनगोइयाँ हैं।

हज़रत दानियाल, हज़रत उज़ैर के ज़माने में थे और ईसा से 568 साल पहले बख़्तुन नस्र के हाथों गिरफ़्तार हुए थे।

वह बेबीलॉन या बाबुल के इलाक़े में गुलाम बनाकर भेजे गए थे चूँकि उन्होंने बादशाह के आगे सिर झुकाने से इन्कार कर दिया था इसलिए उन्हें एक ऐसे कुँएं जैसी जगह में फेंक दिया गया था जहाँ एक भूखा शेर मौजूद था लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी से उस शेर ने आपको कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया। ज़ायरीन जब ज़ियारतों के लिए इराक़ जाते हैं तो बाबुल के इलाक़े में मक़ामे दानियाल की ज़ियारत भी करते हैं।

हज़रत दानियाल ख़्वाबों (Dreams) की ताबीर बताने में मशहूर थे। इबरानी (Hebrew) ज़बान में 'दानियाल' के मतलब हैं ''ख़ुदा मेरा हाकिम है''। बख़्तुन नस्र की मौत के बाद बहमन बादशाह ने उन्हें बैतुल मुक़द्दस भेज दिया। बाद में वह अहवाज़ गए और ईरान के शहर ''शूश'' में उनकी मौत हो गई। उस वक़्त की रस्म के मुताबिक़ उनकी लाश को ममी बनाकर उन्हें एक तहख़ाने में रख दिया गया। इस्लाम फैलने के बाद हज़रत अली[अ] के हुक्म से उन्हें इस्लामी तरीक़े से दफ़्न किया गया। उसके बाद हज़रत अली[अ] ने पास के एक दरिया का रुख़ इस तरह से मुड़वा दिया कि वह क़ब्र के ऊपर से बहे। ऐसा इस डर से किया गया था कि अगर यहूदियों को इस क़ब्र का पता चला तो वह लाश निकाल कर ले जाएंगे। उनकी क़ब्र पर जो पत्थर की तख़्ती लगी है उस पर हज़रत अली[अ] का क़ौल लिखा है कि ''जो हमारे भाई दानियाल की ज़ियारत करता है, वह ऐसा है कि जैसे उसने मेरी ज़ियारत की।''

हज़रत दानियाल पैग़म्बर की क़ब्र का पता 1973 में उस वक़्त चला जब शूश शहर को तरक़्क़ी देने की स्कीम के तहत दरिया का रुख़ फिर बदला गया। मुसलमानों ने बाद में एक रौज़ा बना दिया और उसके चारो तरफ़ इमारत बना दी।

## हज़रत क़ीदार[अ]

इस्लामी हिस्टोरियन याक़ूबी की मशहूर किताब ''तारीख़'' में हज़रत क़ीदार[अ] को हज़रत इस्माईल[अ] का सबसे बड़ा बेटा बताया गया है जबकि अल्लामा मजलिसी की 'बिहारुल अनवार' के मुताबिक़ रसूले इस्लाम[ﷺ] उनकी तीसवीं नस्ल से थे। इब्ने हिशाम ने उनकी माँ का नाम ''राअला''

बताया है जो मज़ाज़ बिन अम्र जुहरामी की बेटी थीं।

लफ़्ज़ 'क़ीदार' के मतलब में इख़्तेलाफ़ है। कुछ इसका मतलब 'काली खाल वाला' निकालते हैं तो कुछ इसका मतलब 'अरब के तमाम क़बीलों का बाप' बताते हैं।

हज़रत क़ीदार[अ०] की क़ब्र ईरान के एक स्टेट 'ज़न्जान' के 'ख़ुदाबंदे' शहर में है। यह ईरान के बहुत छोटे शहरों में से है जिसकी सबसे ख़ास सड़क पर यह क़ब्र है। 700 साल पहले बानो बलग़ान ख़ातून ने इस पर रौज़ा बनाया। अब यह आरकियालोजिकल डिपार्टमेंट की देखरेख में है।

## हज़रत यूशा[अ०]

हज़रत यूशा इब्ने नून इब्ने इब्राहीम इब्ने हज़रत यूसुफ़ इब्ने हज़रत याक़ूब[अ०] हज़रत मूसा[अ०] के ज़माने में थे। हज़रत हारून[अ०] की वफ़ात के बाद तीन साल तक हज़रत मूसा[अ०] के ख़लीफ़ा रहे और 128 साल तक ज़िंदा रहे। हिस्टोरियंस के मुताबिक़ सायरस आज़म के दौर में बाबुल के दूसरे क़ैदियों के साथ आज़ाद किए गए। कुछ ने उन्हें यसआ और हज़रत मूसा[अ०] का भतीजा कहा है।

हज़रत यूशा[अ०] ने अपने बाद हज़रत हिज़क़ील[अ०] को अपना वारिस या ख़लीफ़ा बनाया। वह भी मुर्दों को ज़िंदा और अंधों व बीमारों को ठीक करते थे और पानी पर चलते थे।

ईरान के शहर इस्फ़हान की इमाम सज्जाद रोड पर गुलिस्ताने शोहदा नामी बाग़ के आख़िरी हिस्से में आपकी क़ब्र है। क़ब्र पर कोई रौज़ा नहीं बना है। मैंने ईरान के अपने हालिया सफ़र के दौरान इस क़ब्र की ज़ियारत की है।

## हज़रत सैमुएल (Samuel) या इश्मोईल[अ०]

हज़रत यूशा[अ०] के इंतेक़ाल के बाद बनी इस्राईल (यहूदी) आपसी झगड़ों में उलझ गए। उनकी पुरानी शान ख़त्म हो गई और अल्लाह ने उन पर जालूत (Goliath) बादशाह को हाकिम बना दिया। जालूत ने उनके मर्दों को मार कर, दौलत लूट कर और उनकी औरतों को कनीज़ें बनाकर बनी इस्राईल को ज़लील करना शुरु कर दिया। बनी इस्राईल ने हज़रत इश्मोईल[अ०] से मिन्नत की कि वह अल्लाह से दुआ करें कि वह ऐसा आदमी भेजे जो अल्लाह की राह में जालूत से लड़े। अल्लाह ने हज़रत इश्मोईल[अ०] को हुक्म दिया कि बनी इस्राईल तालूत के आसपास इकटठा हो जाएं जो जालूत से जंग करेगा। इसी जंग में जालूत हज़रत दाऊद[अ०] के हाथों मारा गया।

हज़रत इश्मोईल[अ०] बनी इस्राईल के बीच 40 साल रहे। उन्होंने लोगों को अल्लाह की इबादत करने और बुतों की पूजा बंद करने का हुक्म दिया। उन्होंने बनी इस्राईल की पुरानी इज़्ज़त को बहाल किया। उनका ज़िक्र क़ुरआन में सूरए बक़रा में है।

हज़रत इश्मोईल[अ०] का रौज़ा ईरान के शहर 'सावा' के पास है। क़ब्र के पास लगी तख़्ती के मुताबिक़ सावा से यहाँ की दूरी 11 मील है लेकिन मैं अभी जब इस रौज़े पर गया हूँ तो मीटर के मुताबिक़ सावा से यहाँ की दूरी 45 किलोमीटर है। वरदा मोड़ से बाईं तरफ़ मुड़ने पर काफ़ी दूर पर यह रौज़ा है। इसका पूर्वी हिस्सा नासिरुद्दीन शाह क़ाचार का बनवाया हुआ है। एक चश्मा इसके पास से गुज़रता है जिसे चक्के बार कहते हैं।

## हज़रत हज्जे[अ०]

हिस्टोरियंस का अंदाज़ा है कि हज़रत हज्जे[अ०] की नुबुव्वत का दौर हज़रत मरदख़े[अ०] और हज़रत ज़करिया[अ०] के बीच का है। उनका दौर ईसा से 600 साल पहले का है जब ईरान पर दारा की हुकूमत थी। ईरानी इन्हें हाजा या हाका कहते थे। सब इन्हें नहीं जानते हैं इसलिए जब मैं अभी हमदान गया तो इस जगह को तलाश करने में बहुत दिक़्क़त हुई। इनकी क़ब्र ताहिर रोड पर मस्जिदे पैग़म्बर के पास है।

## चहार अम्बिया

रिसर्च करने वालों के मुताबिक़ यह चार पैग़म्बर अस्हाबे कहफ़ के ज़माने में थे लेकिन एक वक़्त में नहीं थे।

इन पैग़म्बरों के नाम का पता मुझे तब चला जब मैं तेहरान से क़ज़वीन शहर पहुँचा। इसी शहर की पैग़म्बरिया रोड पर एक इमारत है जिसमें एक ज़रीह में यह चारों पैग़म्बर दफ़्न हैं। रौज़े में लगी तख़्ती पढ़ने पर इनके नामों का पता चला। इन चारों पैग़म्बरों के नाम सलाम, सलूम, सहूली और अलाक़िया हैं। उसी ज़रीह के अंदर इमाम ज़ादा सालेह इब्ने इमाम हसन[अ०] भी दफ़्न हैं। इस रौज़े से बहुत

से मोजिज़े ज़ाहिर होते हैं और लोग चहार अम्बिया के वसीले से अल्लाह से दुआ माँगते हैं।

क़ज़वीन का नाम आने पर मैं पढ़ने वालों को एक दिलचस्प जानकारी देना चाहता हूँ। तेहरान से क़ज़वीन जाने पर शहर में दाख़िल होने से पहले दाहिनी तरफ़ एक रास्ता जाता है जिससे 100 किलोमीटर चलने पर मुझे पहाड़ी इलाक़े में एक क़स्बा ज़राबाद मिला। इस जगह इमामज़ादा अली असग़र इब्ने इमाम मूसा काज़िम[अ०] का शानदार रौज़ा बना है। इसी की हद के अंदर वह मशहूर चिनार का पेड़ भी है जिसे मैंने ख़ुद भी देखा है। वहाँ लोगों ने बताया कि इस पेड़ में से हर साल दस मोहर्रम को ज़ोहर के वक़्त ख़ून निकलता है। हर साल बड़ी तादाद में लोग इस मोजिज़े को देखने के लिए इतनी दूर के इलाक़े में इकट्ठा होते हैं। यह भी क़ुदरत का एक करिश्मा है।

### हज़रत हयक़ूक़[अ०]

इस्लामी किताबों में इनका नाम हयक़ूक़ और यहूदी किताबों में हबक़ूक़ दर्ज है। इबरानी ज़बान में इसका मतलब है 'गोद में लिया गया'। इस नाम के पीछे कहानी यह है कि बचपन में आप बहुत ज़्यादा बीमार पड़े और आपकी मौत हो गई। लेकिन जब हज़रत इलियास[अ०] ने इन्हें अपनी गोद में लिया और अल्लाह से दुआ की तो वह ज़िंदा हो गए। आप बनी इस्राईल में नबी बनाकर भेजे गए थे। बादशाह बख़्तुन नस्र की फ़ौजों ने आपको गिरफ़्तार करके बहुत दिनों तक बाबुल में क़ैद रखा था। जब सायरस आज़म ने बाबुल पर क़ब्ज़ा करके उन्हें आज़ाद किया तो वह हमदान चले आए और उनके इन्तेक़ाल के बाद उन्हें अलवंद पहाड़ी की घाटी में एक शहर 'तोसरकान' में दफ़्न किया गया। रौज़ा बहुत शानदार है। इनके बारे में मालूमात वहीं एक तख़्ती में लिखी हैं।

इस तरह ईरान को न सिर्फ़ इस बात पर फ़ख़्र है कि यहाँ आठवें इमाम अली रज़ा[अ०] दफ़्न हैं बल्कि यहाँ बहुत से पैग़म्बर भी दफ़्न हैं।

1-सूरए नहल/36

# TIME MANAGEMENT और घरेलू औरतें

■ तरन्नुम तुराब नक़वी

क़ुरआन में सूरए रहमान की *"और तुम अपने परवरदिगार की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे"* वाली आयत का ज़िक्र बार-बार हुआ है। बेशक अल्लाह तआला ने हमें बेशुमार नेमतें दी हैं और उनके फ़ायदे भी हमको बताए हैं। हमें हर लम्हा अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और इन नेमतों से अपनी ज़िंदगी को संवाराना चाहिए। इन्हीं बेशुमार नेमतों में एक नेमत वक़्त है।

वक़्त जैसी नेमत से इन्सान इन्कार नहीं कर सकता। अल्लाह ने हर इन्सान को दिन रात के 24 घंटे बराबर से दिए हैं और उसे आज़ादी दी है कि वह इस नेमत से किस तरह और कैसे फ़ायदा उठाए। हर इन्सान को अपनी ज़िंदगी ज़िम्मेदारी के साथ गुज़ारनी होती है और अपनी तमाम ज़िम्मेदारियाँ और फ़राएज़ पूरे करने पड़ते हैं। हम इन्सानों को अपने समाज में मिलजुल कर रहना है। क़ुरआन, पैग़म्बर और इमामों की हिदायतों पर बेहतरीन तरीक़े से अमल करना है और अपनी ज़िंदगी का मक़सद हासिल करना है।

मर्द और औरत दोनों को अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ पूरी करनी पड़ती हैं और इधर ज़िंदगी के हर काम का वक़्त तय होता है यानी पैदाइश से मौत तक हर स्टेज पर वक़्त हमारे साथ और हम वक़्त के साथ हैं। कभी हम वक़्त पर हावी होते हैं और कभी वक़्त हम पर और यह सिलसिला मौत तक जारी रहता है। वक़्त जैसी नेमत का बेहतरीन इस्तेमाल किया जाए तो ज़िंदगी के तमाम तक़ाज़े और डिमांड्स पूरी हो सकती हैं और इसके लिए "टाइम मैनेजमेंट" बहुत ज़रूरी है।

आज की इस भागती-दौड़ती ज़िंदगी में टाइम मेनेजमेंट की अहमियत बहुत बढ़ गई है। चाहे हमारी ज़ाती ज़िंदगी हो या समाजी ज़िंदगी, हर जगह वक़्त हावी है। सरकारी काम-काज, बिज़नेस, रेलवे, बस, हवाई जहाज़ का सफ़र, स्कूल-कालेज, टाइम टेबल, इम्तेहान, कामप्टीशन, अस्पताल... हर जगह वक़्त का राज है और जो कोई इसे नहीं मानता वह नुक़सान उठाता है। वक़्त की रफ़्तार कभी नहीं रुकती है, इन्सान को इस रफ़्तार से या तो फ़ायदा पहुँचता है या फ़िर नुक़सान और तकलीफ़!!

इन्सान पैदा होता है और उसकी पूरी ज़िंदगी टाइम मैनेजमेंट के तहत गुज़रती है। अपने बचपन में वह वक़्त की अहमियत को अपने पैरेंट्स से सीखता है। जागना, नाश्ता, खाना, पढ़ना, खेलना, सोना... सारे काम करता है। फिर प्रेक्टिकल लाइफ़ में क़दम रखता है। अगर वक़्त जैसी नेमत को उसने हर स्टेज पर उमदा तरीक़े से इस्तेमाल किया होता है तो ज़िंदगी कामयाब गुज़रती है वरना नाकामी हाथ आती है और जहाँ बेतरतीबी हुई वहाँ उसकी सेहत और मिज़ाज पर भी बुरा असर पड़ता है और तब एहसास होता है कि..."गया वक़्त हाथ नहीं आता"...।

एक घरेलू औरत के लिए टाइम मैनेजमेंट बहुत ज़रूरी है क्योंकि वह एक ही वक़्त में बीवी भी है, माँ भी है, बहू भी है और उसे हर रोल बख़ूबी निभाना है। जब वह अपने लिए टाइम मैनेजमेंट तै कर लेती है और उस पर अमल करती है तब वह सुरख़ुरू और कामयाब होती है। सुबह उठकर अपनी सारी ज़िम्मेदारियाँ पूरे करते-करते उसका पूरा दिन गुज़र जाता है और रात देर गए आराम का मौक़ा मिलता है। कई बार इस भाग-दौड़ की ज़िंदगी में वह बौखला जाती है, परेशान होती है। इसलिए कुछ अमली बातें फ़ायदेमंद साबित होंगी:-

(1) वह अपने पास एक नोटबुक रखे जिसमें अपनी तमाम ज़िम्मेदारियों को लिखे।

(2) हर ज़िम्मेदारी को कब, क्यों और कैसे तै वक़्त पर पूरा किया जाए, यह भी लिखे।

(3) अपनी इन तमाम ज़िम्मेदारियों में किसकी मदद और कितनी और क्यों ज़रूरी है यह भी लिखकर घर के तमाम मेम्बर्स को बताए।

(4) रात को सोने से पहले अगले दिनों के कामों का अंदाज़ा करे और वह सब काम किस तरह से पूरे करने हैं इसका प्लान भी बनाए।

(5) घरेलू औरत के लिए किचन की ज़िम्मेदारी सबसे अहम है। वह किचन के हर काम का प्लान अपने तजुर्बे और सलाहियत से बनाकर उस पर अमल करे तो पूरे घर में इत्मिनान और सुकून का माहोल अपने आप बन जाता है।

इसके अलावा भी टाइम मैनेजमेंट के ताल्लुक़ से कई अमली बातें पेश करके घरेलू औरत दूसरों के लिए मिसाल बन सकती है।

# नज़्म आफ़ंदी का हिन्दी कलाम

## धर्म प्रीत

अंधियारा पाप के बादल का संसार पे जब छा जाता है।
एक चाँद स्वरूपी सूरज रूपी मुखड़ा दर्स सिखाता है।।
जब माया जग को खाती है जब ऐसी बिपदा आती है।
जब मालिक आँख बदलते हैं एक बंदा आड़े आता है।।
एक जीना मरना उनका है जो जीते हैं मर जाते हैं।
एक जीना मरना उसका है जो मर कर अमर हो जाता है।।
जागी हुई कब की आँखें थीं ख़ंजर के तले भी आह न की।
सुख नींद उसी को आती है जो सोती क़ौम जगाता है।।
भाषा के रसीले शब्दों में दुख-रूप कहानी करबल की।
मेहनत यह स्वारत हो 'नज्मी' यूँ कौन किसी को समझाता है।।

## खेवन हारा

करबल बन से चले मुसाफ़िर बाजत कूच नक़ारा।
एक-एक सीस अनी पर चमके, चमके जैसे तारा।।
सबसे लाम्बी बरछी पर वह सीस हुसैना स्वामी का।
भरे-पुरे संसार में जिसको भूका प्यासा मारा।।
प्रेम की नैय्या डूब रही थी कैसी पार लगाई।
अपने लहू में डूब किनारे लाया खेवन हारा।।
जान गए परदेसी-देसी झूठी-सांची महिमा को।
हार है किस की, जीत है किसकी, मान गयो जग सारा।।
हंस-हंस दुख की कड़ियाँ झेलीं, जग को यह उपदेश दिया।
अपने दम का आस भरोसा, मालिक नाम सहारा।।
नगरी-नगरी धूम मची है वा हुसैना बाबा की।
करबल बन में दिया जलायो सारा जग उजियारा।।

## प्रेम पंथी

शब्बीर के तन की बस्ती में शब्बीर का मन क्या हीरा था।
उस दीप की लौ बढ़ती ही रही, आँखों में अंधेरा छाए गया।।
सुनते हैं कि धरती काँप गई, तलवार वह की तलवारिए ने।
जो भोर से लेकर साँझ तलक लाशें ही उठाकर बरसाए गया।।
क्या तीरों की बौछारों में उपदेश की मीठी बातें थीं।
सब अपने लहू के प्यासों पर वह अमृत जल बरसाए गया।।
संसार को सत की शक्ति से घर-बार लुटाकर मोह लिया।
सौदा है ज़रा एक जोखिम का, जो खोए गया वह पाए गया।।
अब जा के हिमालय पर्बत से, लै मातम की टकराती है।
उस देस की 'नज्मी' दूर बला, जिस देस पे यह ग़म छाए गया।।

## हुसैनी सेवा

जी दे के यह स्वर्ग-बाश हुए, कूफ़े के अधर्मी नाश हुए।
शब्बीर का बोल-बाला रहा, इस्लाम की ऊँची बात रही।।
साँचे ही रहे जो साँचे थे, याँ साँच को कोई आँच नहीं।
दुश्मन ही को सब ने दोश दिया और उनके लिए सवात रही।।
ईशर की दया लहराएगी, आकाश की वाँणी आएगी।
दुख-दर्द की जितनी धूप बढ़ी, संतोश की बदली छात रही।।
अब राजा-प्रजा चौखट पर सब सीस नवाए बैठे हैं।
जब छोड़ के दुनिया दीन लिया, दुनिया भी उन्हीं के हाथ रही।।
जब आए हुसैनी सेवा में सब हिन्दू मुस्लिम एक हुए।
मिल जाएंगे 'नज्मी' दिल भी कभी, जब उनकी नजर पर बात रही।।

## दुख का सागर

संसार का चाहा उसने भला, कटवा दिया कुन्बे भर का गला।
शब्बीर के मन के साँचे में करतार ने भगती डाली थी।।
मारे गए सत की सेवा में धनबाद है ईशर भगतों को।
मुखड़ों पे लहू की लाली से बढ़-बढ़ के ख़ुशी की लाली थी।।
यह जी से गुज़रने वाले थे यह बात पे मरने वाले थे।
कब मौत से डरने वाले थे, सौ बार की देखी भाली थी।।

बाप का ख़त बेटी के नाम
दूसरा ख़त

# शादी का पहला महीना

■ अबू ज़फ़र ज़ैन

**प्यारी बेटी! ख़ुश रहो!**

एक कामयाब बीवी बनने के लिए बहुत सी सलाहियतों और क्वालिटीज़ की ज़रूरत है। उसे कभी सियासत दान बनना पड़ेगा, कभी डिपलोमेट, कभी टीचर, कभी नर्स, कभी सेक्रेट्री, कभी कुक, कभी मेज़बान, कभी जनरल मैनेजर, कभी दोस्त, कभी एकउंटेंट और हर कैरेक्टर का एक ही मक़सद होगा... शौहर को ग्रेट बनाना और उसकी कामयाबी से अपना हिस्सा वुसूल करना।

शौहर को ग्रेट बनाना हर बीवी की पहली ज़िम्मेदारी और उसकी ज़िंदगी का पहला मक़सद है। अगर ग्रेट लोगों की ज़िंदगी देखी जाए तो हर मर्द के पीछे एक औरत नज़र आती है। अगर हिस्ट्री को देखा जाए तो वही क़ौम तरक़्क़ी और कल्चर की बुलंदियों तक पहुँची है जिसने अपनी घरेलू ज़िंदगी को अच्छी तरह संवारा है। जिसने औरतों को इस क़ाबिल बनाया है कि वह मर्दों की पर्सनॉलिटी बना सके। क़त्ल से लेकर लीडरशिप तक और स्पोर्ट्स से लेकर स्पेस में उड़ान तक मर्द अपनी महबूबा को ख़ुश करने के लिए क्या कुछ नहीं कर गुज़रता है?अपनी बीवी को ख़ुश करना... यही तो मर्द का मक़सद है, उसकी असली ताक़त है, उसकी एटॉमिक पावर है।

बेटी! तुम अब क़ानून व मज़हब की निगाहों में तो बीवी बन चुकी हो मगर यह तो पहली मंज़िल है। असली मंज़िल तो अभी बहुत दूर है।

**सितारों से आगे जहाँ और भी हैं।**
**अभी इश्क़ के इम्तेहाँ और भी हैं।।**
**इन ही रोज़ो शब में उलझ कर न जाना।**
**कि तेरे ज़मीनो ज़माँ और भी हैं।।**

तेरी दूसरी मंज़िल है बीवी से महबूबा बनना। यहाँ पर निस्वानियत यानी जिस्मानी हुस्न के साथ-साथ अक़्ल, सूझ-बूझ, हिम्मत और मेहनत का भी इम्तेहान है।

हम ने एक बड़े सरकारी अफ़सर से पूछा कि आपकी कामयाबी का राज़ क्या है?उसने कहा कि मैंने कभी हालात से हार नहीं मानी। जब मैं बेरोज़गारी की वजह से बिल्कुल बरबाद हो चुका था तो हर आदमी कहता था कि तुम बेवक़ूफ़ हो मगर मेरी बीवी कहा करती थी कि तुम हीरो हो और मेरी हिम्मत बढ़ाकर उसने सचमुच मुझे हीरो बना दिया।

एक यतीम अमेरिकन लड़की ने कहा, "मेरी जवानी अजीब तरह से गुज़री है। मुझे ख़ालाओं के उतारे हुए कपड़ों से काँट-छाँट कर अपने कपड़े बनाने पड़ते थे क्योंकि मेरे पास नए कपड़ों के लिए पैसे नहीं थे। सोसाइटी में मेरी कोई क़ीमत नहीं थी, दूसरी लड़कियों के मुक़ाबले में मैं बदसूरत भी

थी और उम्र में भी छोटी थी। एक दिन फ़ालेज के शिकार एक लंगड़े लड़के से मुलाक़ात हो गई।" उसने कहा, "मिस एलीज़! मैं आपसे शादी करना चाहता हूँ।"

मैं इस शर्त पर राज़ी हो गई कि वह मुझे सोसाइटी में सबसे ऊँचा स्टेटस दिलाने में मेरी मदद करेगा। और शुक्र है कि फ्रेंकलिन रोज़ विल्ट अपनी बात पर डटा रहा। (यह वही रोज़ विल्ट है जो लगातार चार बार अमेरिका का प्रेसीडेंट बना था।)

इस्लामी हिस्ट्री में इसकी कई मिसालें दी जा सकती हैं।

मर्द क्या है? एक ज़नाना प्रोडक्ट है। बचपन में उसे माँ बनाती है। लड़कपन में उसे बाप बनाता है। और फिर पूरी ज़िंदगी उसे बीवी बनाती है मगर उसकी महबूबा, उसके दिल की मलका, उसके स्टेयरिंग व्हील की ड्राइवर बन कर। और यह एक आर्ट है जो सीखने ही से हासिल हो सकती है। इस नेक काम में औरत की जिस्मानी ख़ूबसूरती और उसकी जवानी बहुत साथ देती है। लेकिन खुदा का शुक्र है कि यह इतनी ज़रूरी भी नहीं है। अगर तेरे पास हुस्न और जवानी नहीं तो क्या ग़म है। सलीक़ा, अख़्लाक़, कैरेक्टर, ख़िदमत और सबसे बढ़कर अक़्ल तो है, उस से काम ले।

प्यारी बेटी! अक़्ल किसी अनोखी चिड़िया का नाम नहीं है। खुदा जब किसी इन्सान को दिमाग़ देता है तो उसे अक़्ल का बीज भी दे देता है। अब यह इन्सान पर डिपेंड करता है कि वह दीनी और दुनियावी इल्म, गहरी सूझबूझ, रिसर्च और अमल से इस बीज को एक पेड़ बना पाता है या नहीं। हम ने देखा है कि सही गाइडेंस न होने की वजह से अच्छे दिमाग़ की लड़कियाँ अपनी शादीशुदा ज़िंदगी में ठोकरें खाती हैं और अपनी पूरी ज़िंदगी ख़राब कर लेती हैं।

इसलिए इस लेटर में और आइंदा के कुछ लेटर्स में हम तुम्हें कुछ ख़ास मश्वरे पेश कर रहे हैं जिन पर चलना तुम्हारा काम और तुम्हारी मर्ज़ी है। चलोगी तो तुम्हारा भला होगा और नहीं चलोगी तुम से ऐसी हमें उम्मीद नहीं है।

हर नए माहोल में शुरु के कुछ हफ़्ते बड़े नाज़ुक होते हैं। इन ही कुछ हफ़्तों में ससुराल के लोग तेरे बारे में अच्छी या बुराई की राय हमेशा के लिए बना लेंगे जिनका अच्छा या बुरा असर दसियों साल तक रहेगा। इन ही कुछ हफ़्तों में तू शौहर पर कंट्रोल हासिल कर सकेगी वरना शौहर तुझ पर कंट्रोल हासिल कर लेगा।

याद रख! सिर्फ़ मेहनत और ख़िदमत काफ़ी नहीं है। हर गधा गवाह है कि दुनिया में बग़ैर अक़्ल के मेहनत की कोई वैल्यू नहीं होती।

याद रख! मोहब्बत काफ़ी नहीं है। अभी तो इश्क़ की शुरुआत है। आगे-आगे देखिए होता है क्या? जिस्मानी एट्रेक्शन का नाम मोहब्बत नहीं है। यह चीज़ तो बाज़ारी औरतों में भी होती है। सच्ची और मज़बूत मोहब्बत तक पहुँचने का रास्ता तो तै है। जाहिल लड़कियाँ इस रास्ते को नहीं जानती हैं। बेवकूफ़ लड़कियाँ इस रास्ते को छोड़ देती हैं।

**Rule-1**

**असली कामः ज़रूरत को पूरा करना**

अपने इर्दगिर्द ज़रा अच्छी तरह देख ले कि तेरे शौहर की ज़रूरतें और ख़्वाहिशें क्या हैं और उनमें सबसे अहम ज़रूरत कौन सी है। उसे वह ज़रूरत कहाँ है, बेडरूम में, ड्राइंग रूम में, किचन में, खेल के मैदान में, आफ़िस में, दुकान में, लाइब्रेरी में, सोसाइटी में या पालिटिक्स में। इनमें से कौन-कौन सी ज़रूरतें तू पूरी कर सकती है और किस तरह। जब तक उसकी ज़रूरत पूरी होती रहेगी वह तेरी ज़रूरतें पूरी करता रहेगा। अगर आपस में ज़रूरत पूरी होती रहेगी तो आपस में मोहब्बत भी पूरी होती रहेगी।

"ज़रूरत पूरी करने" के सामने हुस्न, सेहत, जवानी, इल्म, सलीक़ा, दौलत जैसे अलफ़ाज़ का कोई मतलब नहीं है। बीवी बहुत हसीन, बहुत सेहतमंद, बहुत एजुकेटेड और बहुत पाकीज़ा कैरेक्टर की क्यों न हो लेकिन अगर उस से ज़रूरत पूरी न होती हो तो वह मोहब्बत की मंज़िल में नहीं आ सकती और दिल तो ख़ाली नहीं रह सकता है इसलिए नफ़रत उसकी जगह ले लेती है।

इसलिए बदसूरत, बुढढी, जाहिल और ग़रीब लेकिन अक़्लमंद बीवियाँ कामयाब होती हैं। शौहर उन पर जान छिड़कता है और वह घर और घर से बाहर हर जगह हुकूमत करती हैं। इसी अक़्ल की कमी की वजह से ख़ूबसूरत और जवान लड़कियाँ, जान और माल हर तरह की क़ुरबानी पेश करने और सच्चे दिल के साथ ख़िदमत करने वाली औरतें और अच्छी सीरत और पाकीज़ा कैरेक्टर वाली लड़कियाँ नाकाम हो जाती हैं और उनके शौहरों को चालाक बल्कि बाज़ारी औरतें उचक लेती हैं। यूरोप, अमरीका में कभी-कभी बीवियों के मुक़ाबले में सेक्रेट्रियाँ कामयाब हो जाती हैं। आख़िर वह कौन सी ज़रूरत है जो सेक्रेट्री या बाज़ारी औरत तो पूरा करती है और बीवी पूरा नहीं कर सकती जबकि बीवी के पास ज़्यादा मौक़ा होता है। ज़ाहिर सी बात है कि इसका जवाब सिर्फ़

ख़ूबसूरती नहीं हो सकती।

**Rule-2**

ज़रूरत जितनी ज़्यादा और जितने दिन तक होगी सामने वाले की तरफ़ से मोहब्बत उतनी ही ज़्यादा और उतने ही दिनों तक बाक़ी रहेगी।

**Rule-3**

ज़रूरतें घटती और बढ़ती रहती हैं। मगर कुछ ज़रूरतें हमेशा रहने वाली हैं जो अहम हैं और बुनियादी भी। कुछ ज़रूरतें उम्र के साथ-साथ बढ़ती जाती हैं। अगर तू हमेशा ज़रूरत पूरी करती रही तो शौहर की मोहब्बत भी तेरी उम्र के साथ बढ़ती रहेगी। अगर ज़रूरत पूरा करने में कमी आई तो मोहब्बत में भी कमी आएगी।

यह तीन उसूल सिर्फ़ शौहर को हासिल करने के लिए नहीं हैं बल्कि पूरे ससुराल वालों को और पूरी दुनिया वालों को हासिल करने के लिए भी हैं।

तो प्यारी बेटी! सबसे पहले यह देख ले कि तुझे किस-किस की मोहब्बत हासिल करना है। ज़्यादा और हमेशा रहने वाली मोहब्बत हासिल करना है तो फिर शौहर की ज़ेहनी और जिस्मानी व दुनियावी, ज़्यादा और हमेशा रहने वाली ज़रूरतों की एक लिस्ट बना ले और ग़ौर कर कि तू इन ज़रूरतों को किस तरह पूरा कर सकती है।

याद रख! बहुत से मामले बग़ैर किसी सामान के हल किए जा सकते हैं और बहुत से मामले जिस्मानी नहीं होते बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़ेहनी होते हैं।

बीवी होने का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि तुझे एक ख़ास मर्द को अपनाने का मौक़ा मिला है जो किसी और को नहीं मिला है। तू इस मौक़े को हाथ से मत जाने दे।

तू उस से बहुत क़रीब है बल्कि सबसे ज़्यादा क़रीब है। उसके घर में है, 'रात और दिन' सबके बीच और यहां तक कि तन्हाई में भी उसके साथ है। उसकी ज़रूरतों और ख़्वाहिशों को समझ क्योंकि बहुत सी ज़रूरतें और ख़्वाहिशें ख़ामोश होती हैं। अच्छा है कि वह ख़ामोश ही रहें और तू उन्हें ख़ामोशी से पूरा करती रहे क्योंकि कभी-कभी सारा मज़ा ख़ामोशी में ही होता है। बहरहाल तू जल्दी से जल्दी उसकी ख़्वाहिशों और ख़ुशियों पर एक नज़र डाल ले कि उसने किस माहौल में आँखें खोली हैं? घर में उसे किस से कैसा बिहेवियर मिला है? ज़माने ने उसे कैसा बनाया है? किन चीज़ों या किन लोगों में उसकी दिलचस्पी है? किन चीज़ों या किन लोगों से उसे उलझन है और क्यों? ज़रा उसके दिल में डूब। उसके दिमाग़ में घुस जा। उसके देखने और सोचने के अंदाज़ को परख। उसकी कशिश, उसके खाने और पहनने का तरीक़ा, उसकी तड़प, उसकी उमंग, उसके मामले और उनके हल, उसके रात और दिन यहाँ तक कि उस के ख़्वाब और ख़याल में बिराजमान हो जा और उस झरोके से दुनिया को देख।

वह क्या था? क्या है? आगे एक साल या पाँच सालों में वह क्या बनना चाहता है?एक समझदार बीवी का काम है कि इन बातों का सही और बिल्कुल सही तरीक़े से जाएज़ा ले और बहुत जल्दी यह काम करे। वह क्या था?और क्या है?यह दोनों चीज़े तेरे कंट्रोल से बाहर हैं। लेकिन वह क्या बनना चाहता है? यहाँ तेरी ज़रूरत है और होना चाहिए। ज़्यादा से ज़्यादा होना चाहिए। तेज़ से तेज़ होना चाहिए। ज़रूरत पूरी करने का अंदाज़ जितना अच्छा होगा शौहर की तरफ़ से मोहब्बत बल्कि क़ुरबानी भी उतनी ही ज़्यादा होगी।

वह क्या बनना चाहता है? इसका जवाब बड़ी हद तक इस सवाल में है कि वह क्या था। बल्कि वह क्या नहीं था। इस फ़र्क़ को समझने में काफ़ी मेहनत करना पड़ेगी कि वह क्या हासिल करना चाहता था मगर नहीं कर सका। आख़िर किस चीज़ की कमी रह गई और इसकी क्या वजह है? ज़ाहिर सी बात है कि फ़्युचर में वह इसी कमी को पूरा करने में अपनी सारी हसरत और मेहनत ख़र्च कर देगा। अगर वह फ़ाइनेंशली कमज़ोर था तो अब दौलतमंद बनना चाहता है। अगर सोसाइटी में उसकी कोई हैसियत नहीं थी तो अब वह बाइज़्ज़त बनना चाहता है। अगर उसे मोहब्बत और ख़िदमत नहीं मिल सकी तो अब मोहब्बत और ख़िदमत चाहता है। अगर वह बीमार था तो अब सेहत चाहता है। वह बे घर था तो अब महल का मालिक बनना चाहता है। जो कुछ वह था इतना अहम नहीं है जितना जो कुछ वह नहीं था। क्योंकि अब उसके दिल की पूरी जगह उस तमन्ना ने ले ली होगी।

**Rule-4**

वह भी दुनिया से बदला लेना चाहता है। जिस तरह तू दुनिया से बदला लेना चाहती है, उन चीज़ों में से जो तुझे नहीं मिल सकीं। बीवी के लिए शौहर का और शौहर के लिए बीवी का दिल जीतना बहुत आसान है। जो चीज़ उसको न मिली हो और जिसे पाने की उस में तमन्ना और तड़प हो, वह चीज़ उसको दे दे। अगर तेरे सामने वाले को इज़्ज़त नहीं मिली तो उसे इज़्ज़त दे। वह इज़्ज़त का भूका है। अगर उसे

अच्छा माहौल या अच्छा खाना या अच्छा कपड़ा नहीं मिला तो उसका बंदोबस्त कर।

जो नहीं मिला वह दे। जो कम मिला वह दे। जो ज़्यादा मिला वह भी दे। बग़ैर कुछ पूछे हुए दे और उसके साथ एक मुस्कुराहट भी दे क्योंकि एक मुस्कुराहट हर तरह की लिपिस्टिक से ज़्यादा क़ीमती है। जवाब में जो तुझे नहीं मिला, जो तुझे कम मिला या ख़राब मिला वह ले। बग़ैर कुछ पूछे हुए ले और साथ में एक मुस्कुराहट भी ले ले। दुनिया से बदला लेने में वह तेरी मदद करे और तू उसकी। फिर नामुमकिन है कि तू अपनी बदसूरती के बावजूद उसकी लैला न बन जाए और वह तेरा मजनूं बन कर पहाड़ खोदने और दूध की नहर बहाने में अपना तन मन धन न लगा दे।

### Rule-5

धीरे-धीरे ज़रूरत पूरी करना तेरी आदत हो जाएगी और उसी के हिसाब से मोहब्बत तेरे शौहर का नेचर बन जाएगी। फिर हो सकता है कि मोहब्बत की मंज़िल में आ जाने के बाद ज़रूरत पूरी करने की ज़रूरत ही न रहे या ज़्यादा न रहे। फिर भी होशियारी और एहतियात इसी में है कि ज़रूरत पूरी करने का सिलसिला हमेशा बाक़ी रखा जाए।

### Rule-6

मोहब्बत के लिए सिर्फ़ दो चीज़ों की ज़रूरत है। ख़ूबसूरत कॉमन पास्ट की याद और ख़ूबसूरत कॉमन फ़्युचर की तरफ़ क़दम।

शौहर को अपना मजनूं बनाकर और उसकी लैला बन कर तेरी ज़िंदगी का मक़सद ख़त्म नहीं हुआ। सफ़र अभी लम्बा है लेकिन शौहर का दिल हासिल करके तू ने ट्रेन का टिकट ले लिया है और सफ़र का ख़र्च भी। जो कुछ अब तक तेरे शौहर को नहीं मिला, जिसने पाने की उस में तड़प और उमंग है, ख़ुदा करे कि तेरी वजह से उसे हासिल हो जाए। अगर उसे वह जिस्मानी और ज़ेहनी चीजें मिल गईं तो उसमें एक नई बात ज़रूर पैदा हो जाएगी। उसमें कुछ नई सलाहियतें पैदा हो जाएंगी और कुछ पुरानी सलाहियतें उभर जाएंगी। उसकी पर्सनालिटी में एक निखार और एक बहार आ जाएगी। उसकी उमंग में, उसकी हिम्मत में, उसकी सूझबूझ में बड़ी ताक़त और तेज़ी पैदा हो जाएगी। यही सबसे अच्छा वक़्त है कि उसे किसी अज़ीम मक़सद की तरफ़ लगा दिया जाए और यह लगाना तेरा काम है। फिर वह इंजन की तरह चल निकलेगा।

हर आज तेरी आने वाली पूरी ज़िंदगी का पहला दिन है। हर चौबीस घंटों के बाद कल बन जाएगा। इसलिए हर आज में वह चीज़ें डाल दे जो ख़ूबसूरत पॉस्ट की याद बन सके।

उठ! कमर बाँध ले! हर सुबह की अज़ान पुकारती है कि नई सुबह की शुरुआत हो रही है। नई-नई उम्मीदें करवटें ले रही हैं। नई-नई ज़िम्मेदारियाँ तुम्हें बुला रही हैं। सोने वालो! खड़े हो जाओ और खड़े होने वालो! अपने-अपने काम में लग जओ। वक़्त की मिट जाने वाली पूँजी को अन-लिमिटेड ज़ात की हमेशा रहने वाली पूँजी में बदल दो।

याद रख! अगर तेरा शौहर आगे निकल गया और तू पीछे रह गई तो आपस में दूरी और एक गैप पैदा हो जाएगा और यह गैप बढ़ता ही रहेगा। जब ज़रूरत पूरी करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा जो कि क़दम मिलाकर चलने में ही हो सकती है, तो मोहब्बत भी ठंडी होती चली जाएगी। मक़सद कॉमन हो, सूझबूझ कॉमन हो और काम भी कॉमन हो, मोहब्बत इसी कॉमन होने का नाम है।

### Rule-7

### फ़ैसला उसका, मश्वरा तेरा

ज़िंदगी के इस सफ़र में बुरे वक़्त भी आएंगे और अच्छे वक़्त भी। अक़्लमंद बीवी वह है जो बुरे वक़्त में भी साथ दे और अच्छे वक़्त में भी। वैसे बुरे वक़्त में मेहनत और मुस्कुराहट का ख़र्च ज़्यादा है।

अक़्लमंद बीवी वह है जो अपने शौहर में नई स्प्रिट भर दे। उसकी और अपनी सलाहियतों को उजागर कर दे। उन सलाहियतों को इस्तेमाल करने का मिशन जान जाए और शौहर को आगे बढ़ाकर उसके साथ चल खड़ी हो।

अक़्लमंद और समझदार बीवी वह है जो अपने शौहर की ज़्यादा से ज़्यादा और बड़ी से बड़ी ज़रूरत पूरी करती रहे। घरेलू लेविल पर भी और इल्म और हुनर के मैदान में भी। इसलिए शौहर के इल्म और हुनर की थोड़ी बहुत जानकारी बीवी के लिए ज़रूरी है।

अक़्लमंद बीवी वह है जो ख़ुलूस और ख़िदमत के साथ हंसता-मुस्कुराता हुआ चेहरा रखे, ख़ासकर उस वक़्त जब ग़म के बादल छाए हों। जिसका हर आज का दिन कल के अच्छे दिन की ख़ुशख़बरी लाए।

अक़्लमंद बीवी वह है जो फ़ैसले का पूरा काम शौहर के हाथ में दे लेकिन मश्वरे का डिपार्टमेंट अपने हाथ में रखे। उसके मश्वरे इतने क़ीमती और वज़नी हों कि शौहर के फ़ैसलों को हर क़दम पर उनकी ज़रूरत पड़े।

तो मेरी बेटी! उसूल इसके अलावा और भी हैं। फिर कभी वक़्त मिलने पर इन्शाअल्लाह।

# LEUCORRHOEA
# ल्यूकोरिया को अनदेखा न करें

■ डॉ. आले मोहम्मद अलीग

कुदरत ने जब इन्सान को पैदा किया तो उसने औरत को हर एतेबार से सजाया-संवारा और उसके अंदर औरतपन की सारी सिफ़तें भी रख दीं। साथ ही उन्हें शर्म व हया, ख़ूबसूरती व पाकीज़गी भी दी जो उनके लिए बहुत ज़रूरी थी।

मगर जानकारी की कमी, तो कभी शर्म और हया की वजह से औरतें कुछ बीमारियों को अन्देखा कर देती हैं और यह ला-परवाही आने वाले वक़्त में Choronic बीमारी की वजह बन जाती है। लिकोरिया एक ऐसी ही बीमारी है। डाक्टरों के मुताबिक़ औरतों में Vaginal Discharge Leucorrhoea की शिकायत बहुत ज़्यादा पाई जाती है। लिकोरिया एक ऐसी बीमारी है जिसमें एक लम्बे वक़्त तक शिकार रहने से औरतों में ज़ेहनी तनाव ही नहीं बल्कि उनकी ख़ूबसूरती में भी फ़र्क़ पड़ता है।

इस मर्ज़ में औरत की Vagina से लाल या सफ़ेद पानी जैसा माद्दा निकलता रहता है या अंडे की सफ़ेदी की तरह की एक रुतूबत निकलती रहती है। यह माद्दा ज़्यादा निकलने की सूरत में कमर और पैरों में दर्द, कमज़ोरी, थकान और ज़ेहनी तनाव पैदा कर देता है। सुस्ती, काहिली और चेहरे पर बे-रौनक़ी वग़ैरा जैसी निशानियां ज़ाहिर होने लगती हैं जिस से आम सेहत ख़राब हो जाती है।

ध्यान रहे कि किसी क़द्र Veginal Membren की मौजूदगी आमतौर से नेचुरल समझी जाती है लेकिन जब रुतूबत इतनी ज़्यादा बहने लगे कि कपड़ा भी ख़राब हो जाए या बीमारी की निशानी दिखाई देने लगे तो फिर यह चीज़ मर्ज़ है और उसे मर्ज़ की तरह ही ट्रीट करना चाहिए।

ग़ैर शादी शुदा औरतों में बिल्कुल साफ़ हॉफ़-फ़्रीज़्ड मवाद होता है। बच्चे की पैदाईश वाली औरतों में यह ज़्यादा पतला और दूधिया होता है। आज कल समाज में क़रीब 80% औरतें इस मर्ज़ में घिरी हैं। कुछ औरतें या कम उम्र लड़कियाँ इस मर्ज़ को छुपाती रहती हैं जिनमें से कुछ शादी के बाद ज़ाहिर करती हैं जिसकी वजह से यह मर्ज़ बहुत क्रॉनिक हो जाता है।

## फ़ैक्टर्स और वजहें

- Vagina की सफ़ाई न रखना
- ज़ेहनी तनाव, पेट में गाँठ या कैंसर (C.A.)
- Utereus या Vegina में वरम
- रहम की बवासीर या रहम में दाने (सुबूर)
- डेलिवरी या एर्बोशन
- कम उम्र में प्रेग्नेंसी
- फ़ैमिली प्लानिंग या एंटी प्रेग्नेंसी दवाएं खाना
- कॉपर-टी वग़ैरा का इस्तेमाल
- पुराना क़ब्ज़
- दिल की बीमारियां, Cirrhosis of Liver
- ज़ेहनी परेशानियों, उलझनों और काम की ज़्यादती से भी यह बीमारी बहुत बढ़ जाती है।
- Amenorrhoea: इस मर्ज़ में शुरूआत में पीरियड्स नहीं आते हैं या कुछ वक़्त आकर बंद हो जाते हैं या कई-कई महीने के गैप के बाद आते हैं।
- Uterus का Inflamation

## सिम्पटम्स और निशानियाँ

मरीज़ की आम सेहत ख़राब और मिज़ाज चिड़चिड़ा हो जाता है। Pelvis में भारीपन के साथ दर्द होता है। पेशाब की ज़्यादती होती है। कमर और पिंडलियों में दर्द होता है। पेडू में दर्द के साथ बोझ होता है। तबीअत सुस्त रहती है। हाथ पैरों में जलन का एहसास होता है। क़ब्ज़ की शिकायत अकसर रहने की वजह से पैख़ाना करते वक़्त ज़ोर लगाना पड़ता है जिसकी वजह से यूटिरस से एक

पतले ज़र्द रंग की तरह की या सफ़ेद रुतूबत अकसर निकलती रहती है।

मुसलसल इस रुतूबत के बहने की वजह से चेहरा ज़र्द, बे-रौनक़, बदन कमज़ोर और तबीयत सुस्त हो जाती है। आख़िर में पीरियड्स पर भी असर पड़ने लगता है। बीमारी पुरानी हो जाए तो रहम के अंदर दाने पैदा होने लगते हैं और यूटिरस के मुँह और होंटों पर जलन होती रहती है। ऐसी सूरत में मवाद के निकलने की मिक़दार तो कम होती है मगर पीरियड्स तकलीफ़ से आते हैं।

### बचाव का तरीक़ा

Vagina की सफ़ाई का ख़याल रखें

ताक़त वाली ग़िज़ाएं खाएं और दिमाग़ी तनाव से दूर रहें

मेहनत व मशक़्क़त से जितना हो सके उतना दूर रहें

दर्द को दूर करने की कोशिश करें

### इलाज

अपने डाक्टर से मश्वरा करें

अगर क़ब्ज़ हो तो उसे दूर करें

खाई जाने वाली एंटी प्रेग्नेंसी दवाओं का इस्तेमाल रोक दें

यूनानी दवाएं लें क्योंकि इन दवाओं से काफ़ी आराम मिलता है

कुश की जड़ और अशोक की छाल उबाल कर सुबह-शाम लें

गूलर के पत्ते को सुखा कर उसका पाउडर बना लें और दिन में दो बार लें

सेंभल के फूल की सब्ज़ी देसी घी में पका कर लें

देसी बबूल के पत्तों को सुखा कर उसका पाउडर बना लें। 4 ग्राम दूध के साथ सुबह-शाम लें।

### नुस्ख़ा

सफूफ़े सैलान या सफूफ़े सैलाने रहमः 2 चमचे सुबह-शाम

माजूने मुक़व्वियुर रहमः एक चमचा सुबह व शाम

माजूने मोजरसः एक चमचा सुबह-शाम

या Capsule Leukofin (Herbo Drugs Pharma, Allahabad): दो-दो तीन वक़्त लें

मेथी-मिस्री व मुलेठी का एक-एक चमचा पाउडर चावल के माढ़ के साथ लें।

# आप भी मरयम

## के लिए आर्टिकिल भेज सकती हैं...

1. A4 साईज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार

# माडर्न एज और हम

## MODERN AGE

■ ख़्वाजा इकराम

आज के दौर में साइंस का कोई ओर-छोर नहीं है और इन्सान के सोचने का अंदाज़ भी बिल्कुल बदल चुका है। साइंस के इस ठाठें मारते समंदर का तसव्वुर अब बदल चुका है। इस आर्टिकिल में हम साइंस के उस समन्दर के बारे में बात करेंगे जो ज़मीन पर नहीं बल्कि स्पेस में ठाठें मार रहा है। यह समन्दर आज की दुनिया की ऐसी ज़रूरत बन गया है कि अगर इसकी मौजों के तलातुम से कोई तहज़ीब, कल्चर, मुल्क या क़ौम दूर रह गई तो इस ग्लोबल विलेज में शायद उसकी कोई हिस्सेदारी न रहे। जी हां! सेटेलाइट सिस्टम पर तेज़ी से आगे बढ़ती दुनिया की सारी मालूमात और सारे रिर्सोसेज़ इसी समन्दर की गहराईयों में छिपे हैं। इस समन्दर से मोती वही चुन कर लायेंगे जो बेहतरीन और फुर्तीले ग़ौताख़ोर होंगे। आज की तमाम तरक़्क़ी और साथ ही सारी बुराईयां भी इसी से जुड़ी हैं। लेकिन घबराने की भी कोई बात नहीं हैं क्योंकि इस अज़ीम समन्दर में आप सिर्फ़ अपनी फ़िंगर टिप्स के ज़रिए ग़ोते लगा सकते हैं। कम्प्यूटर के की-बोर्ड पर उंगली रखकर दुनिया और दुनिया की सारी जानकारियां, इंर्फ़ामेशन, तरक़्क़ियां और रिर्सोसेज़ घर बैठे हासिल किए जा सकते हैं। यही साइबर स्पेस है और यही स्पेस में इल्म का ठाठें मारता समन्दर है। यानी साइबर स्पेस आज के ज़माने का वह ख़ज़ाना है जहां इल्म, साइंस और मालूमात का ज़ख़ीरा छिपा हुआ है। यह एक ऐसा ज़रिया है जिससे तालमेल वक़्त की सबसे अहम ज़रूरत है। इन्सानी ज़िंदगी तरक़्क़ी की मंज़िलें तय करती हुई आज जिस दौर से गुज़र रही है उसे हम साईबर-एज का नाम देते हैं। कम्प्यूटर और इंटरनेट ने ज़िंदगी के हर डिपार्टमेंट पर अपना असर डाला है जिसकी वजह से इन्सानी समाज में टेक्नालोजी और मीडिया का एक नया रूप उभर कर सामने आया है। इन्सानी समाज ने इससे पहले भी बहुत सारे बदलाव देखे हैं, लेकिन यह बदलाव जितनी जल्दी सामने आए हैं उतनी ही जल्दी के साथ उन्होंने इन्सानी समाज की हर फ़ील्ड पर अपना गहरा असर डाला है। टेक्नालोजी के इस नए एंग्ल से दुनिया सचमुच एक ग्लोब नज़र आने लगी है और दुनिया के किसी भी किनारे पर बैठा हुआ शख़्स दूसरे किनारे पर रहने वाले इन्सान से न सिर्फ़ बात करने लगा है बल्कि टेली कांफ्रेंसिंग के ज़रिए उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव और इमोशंस भी देखने लगा है। हज़ारों मील की दूरी अब सिर्फ़ उंगलियों को हिलाने से तय होने लगी है।

आज टेक्नालॉजी की इस रेवुलुशनल दुनिया को साइबर स्पेस का नाम दिया गया है क्योंकि आज हम इलेक्ट्रानिक तारों और सेटेलाइट्स के ज़रिए दूर-दूर का सफ़र अपनी एक अलग डिजिटल दुनिया की वजह से आसानी से तय कर लेते हैं।

आज के दौर को हम मीडिया और इलेक्ट्रानिक या डिजिटल दौर कह सकते हैं। इस दौर में वही क़ौमें, नस्लें और वही तहज़ीब व कल्चर ज़िंदा रह पाएगा जो वक़्त के साथ-साथ अपने क़दम आगे बढ़ाएगा और जो इस सफ़र में पीछे

रह गया उसका नाम व निशान तक मिट जाएगा।

## आज का ज़माना

### माडिया का ज़माना

**1- एडर्वटाइज़मेंटः** आज उसी को अहमियत, बरतरी और कामयाबी हासिल है जो अपने आपको दुनिया के सामने पेश करने में कामयाब है। वरना हमारे पास जो कुछ है वह भी हाथ से चला जाएगा। हमारे पास खुदा का दिया सब कुछ है लेकिन हम अभी तक भी उसे दुनिया के सामने पेश नहीं कर सके हैं। हम दुनिया के सामने खुद का एक्सपोज़ नहीं कर पाते हैं। जबकि आज ऐसे-ऐसे आर्गेनाइज़ेशंस और तन्ज़ीमें भी जो सिर्फ़ दिखावे के लिए मौजूद हैं मगर खुद को एक्सपोज़ करने की वजह से दुनिया उन्हें तसलीम करती है और जो खुद को सामने नहीं ला पा रहे हैं उन्हें कोई पूछता भी है।

### 2- इलेक्ट्रानिक या डिजिटल ज़माना

आज के दौर में इस साइंस की तरक़्क़ी ने ज़िंदगी के हर डिपार्टमेंट पर कुछ ऐसा असर डाला है कि इसके बिना अब कोई मिशन, कोई तहरीक, कोई आर्गेनाइज़ेशन और कोई प्रोग्राम कामयाब और असरदार नहीं हो सकता।

इस एतेबार से जब हम मुसलमान पर एक नज़र डालते हैं तो पता चलता है कि हम दूसरी क़ौमों से बहुत पीछे हैं क्योंकि हम अभी तक इस नई टेक्नालॉजी को अपने फ़ाएदे के लिए इस्तेमाल ही नहीं कर पाए हैं। अगर हम थोड़ा-बहुत इस डिजिटल टेक्नालॉजी को इस्तेमाल कर भी रहे हैं तो हमें बहुत ज़्यादा खुश नहीं होना चाहिए क्योंकि जो कुछ भी है वह ऊंट के मुंह में ज़ीरे जैसा है।

## इस्लाम और मीडिया

इस्लाम ऐसा मज़हब है जो हर ज़माने के लिए अप-डेट है।

फिर मीडिया के लिए क्या हुआ, सोचने की ज़रूरत है।

यहां मीडिया से मुराद दीनी पैग़ाम को पहुंचाना है।

इस्लाम में पैग़ाम को पहुंचाने के जो रिर्सोसेज़ हैं वह अपने आप में मिसाली हैं।

लेकिन हम उनकी अहमियत को नहीं समझते या उसे भी रिवायत का एक हिस्सा मानते हैं।

### इस्लामी मीडिया का शुरूआती रूप

इस्लाम को मानने के फ़ौरन बाद ही हम पर यह वाजिब हो जाता है कि हक़ का पैग़ाम दूसरों तक भी पहुंचाएं।

इस्लामी एतेबार से हक़ को छुपाना गुनाह है।

लेकिन हम ने दीनी पैग़ाम पहुंचाने को सिर्फ़ कुछ चीज़ों जैसे तक़रीरी महफ़िलों वग़ैरा में बांध दिया है।

हम ने आज की ज़रूरत, हालात और माहौल के मुताबिक़ मीडिया की तरफ़ ध्यान नहीं दिया है।

नए कम्नियुकेशन रिर्सोसेज़ को हक़ की दावत के लिए इस्तेमाल करने की कोई अच्छी कोशिश नहीं की है।

अगर हम हिंदुस्तान की सतेह पर देखें तो नज़र आता है कि औलिया और उलमा ने इस सिलसिले में तहरीरी और तक़रीरी मीडिया की शुरूआत की थी यानी बुर्ज़ुगों के रिसाले, उनके लेक्चर्स या तक़रीरें मीडिया की ही शुरूआती शक्लें हैं। बुज़ुर्ग सूफ़ियों ने जिस अंदाज़ में हिंदुस्तान में दीन को फैलाया था उसी मसलेहत और कोशिश की आज भी ज़रूरत है।

इसके बाद अख़बार, मेग्ज़ीन्स वग़ैरा भी दीनी इदारों और उलमा की कोशिशों का नतीजा ही हैं।

लेकिन आज़ादी के बाद से हम ने इस तरफ़ क़रीब-क़रीब ध्यान नहीं दिया है वरना आज हमारे पास सबसे ताक़तवार मीडिया होता।

### मीडिया की कारस्तानियां

इस्लाम और मुसलमानों की तस्वीर को बिगाड़ना।

यहूदी तरीक़ा अपनाते हुए ग़लत और झूठ को इतना चीख़-चीख़ कर पेश करना कि वही सच लगने लगे।

मुसलमानों को टेरॅरिस्ट और मुल्क दुश्मन बताना।

इस्लामी तहज़ीब, कल्चर और वेल्युज़ को बिगाड़ कर पेश करना।

### मौजूदा हिन्दुस्तानी मीडिया और उसके मन्सूबे

मीडिया आज के समाज की तीसरी आंख है।

सच वही माना जाता है जो मीडिया के ज़रिए हम तक पहुंचता है।

ऐसे में हम पर झूठा इल्ज़ाम लगाने वाले सच कैसे बोल सकते हैं, लेकिन हम उन्हीं पर भरोसा किए बैठे हैं।

इक्कीसवीं सदी की दूसरी दहाई चल रही है लेकिन इस तेज़ रफ़्तार दुनिया में तेज़ी से बदलती कल्चरल वेल्युज़ को देखकर अक्सर यह महसूस होता है कि पैसा, दौलत और ताक़त के कंधों पर सवार अलग-अलग क़ौमों और मुल्कों के लोग अगर अपनी कल्चरल आइडेंटिटी और वेल्युज़ को मज़बूती से थामे न रहें तो बदलती दुनिया के हल्के झटके भी उन्हें गहरी खाई में पहुंचा देंगे। क्योंकि कन्ज़ियुमरिस्म (Consumerism) के इस दौर में सारी क़ौमें अपनी पहचान और आइडेंटिटी की तलाश में परेशान हैं और एक दूसरे से आगे निकल जाने की हौड़ में लगी हुई हैं जिसके लिए वह किसी ग़ैर अख़्लाक़ी, ग़ैर क़ानूनी और ग़ैर इन्सानी क़दम से भी बाज़ नहीं आतीं। इसकी मिसालें फ़िलिस्तीन, ईराक़, अफ़ग़ानिस्तान, लेबनान और अब ईरान की नई सूरतेहाल है। ●

(अवधनामा)

# मरयम

## की तरफ़ से

## ख़ूबसूरत और क़ीमती तोहफ़े

'मरयम' की गिफ़्ट कूपन स्कीम को नवम्बर 2012 से बढ़ाकर जनवरी 2013 कर दिया गया है।

इसलिए अब ड्रॉ फ़रवरी 2013 में होगा जिसके लिए कूपन भेजने की तारीख़ का एलान जल्दी ही किया जाएगा।

'मरयम' के सभी रीडर्स से हमारी गुज़ारिश है कि कूपन मंगाए जाने के एलान से पहले कूपन न भेजें।

**Contact No.:**

**+91-522-4009558**
**+91-9956620017** (Lucknow)
**+91-9892393414** (Mumbai)
**maryammonthly@gmail.com**

# GULSHAN

## MEHANDI & HERBALS

***IRFAN ALI PRADHAN***
*403 & 404, A Block*
*REGALIA HEIGHTS*
*Ahmadabad Palace Road*
*KOHE-FIZA*
*BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.*
*+919893030792, +917554220261*

***MOHTARMA "GULSHAN"***
*G-1, Krishna Apartment*
*Plot No. 2, Firdaus Nagar*
*Bairasia Road, BHOPAL*
*+91-755-2739111*